Boy Girl

ऊँ गं गणपतये नमः

शुभ 卐 लाभ

जन्मपत्रिका मेलापक

Boy

卐

Girl

Astroinsight
Delhi NCR
www.astroinsight.in
E-mail : support@astroinsight.in

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर–वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर–वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
21/10/1976	जन्म तिथि	16-17/06/1981
गुरुवार	दिन	मंगल–बुधवार
घंटे 14:15:15	जन्म समय	04:37:00 घंटे
घटी 19:33:33	जन्म समय(घटी)	58:04:46 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Nagpur
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	21:10:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	79:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:13:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:25:49	सूर्योदय	05:31:34
17:46:26	सूर्यास्त	18:56:08
23:32:07	चित्रपक्षीय अयनांश	23:35:38

मकर	लग्न	वृष
शनि	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
कन्या	राशि	वृश्चिक
बुध	राशि–स्वामी	मंगल
उ०फाल्गुनी	नक्षत्र	ज्येष्ठा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	बुध
4	चरण	3
ऐन्द्र	योग	शुभ
वणिज	करण	विष्टि
पी–पीयूष	जन्म नामाक्षर	यी–यीशा
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन
वैश्य	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	कीटक
गौ	योनि	मृग
मनुष्य	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	आद्य
मूषक	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 0वर्ष 8मा 1दि		23:38:35	मक	लग्न	वृष	18:05:22	बुध 6वर्ष 9मा 12दि	
गुरु		04:32:50	तुला	सूर्य	मिथु	02:05:15	चन्द्र	
22/06/2012		08:30:44	कन्या	चंद्र	वृश्चि	24:40:45	30/03/2021	
22/06/2028		15:00:00	तुला	मंगल	वृष	14:43:55	30/03/2031	
गुरु	11/08/2014	23:14:03	कन्या	बुध व	मिथु	09:41:53	चन्द्र	28/01/2022
शनि	21/02/2017	06:02:45	वृष व	गुरु	कन्या	07:27:21	मंगल	29/08/2022
बुध	30/05/2019	07:14:45	वृश्चि	शुक्र	मिथु	20:42:03	राहु	28/02/2024
केतु	05/05/2020	22:04:13	कर्क	शनि	कन्या	09:31:16	गुरु	29/06/2025
शुक्र	04/01/2023	10:01:08	तुला व	राहु व	कर्क	08:28:54	शनि	28/01/2027
सूर्य	23/10/2023	10:01:08	मेष व	केतु व	मक	08:28:54	बुध	29/06/2028
चन्द्र	21/02/2025	13:21:20	तुला	हर्ष व	वृश्चि	03:22:37	केतु	28/01/2029
मंगल	28/01/2026	18:34:30	वृश्चि	नेप व	वृश्चि	29:49:39	शुक्र	29/09/2030
राहु	22/06/2028	18:42:16	कन्या	प्लूटो व	कन्या	28:00:02	सूर्य	30/03/2031

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:32:07 चित्रपक्षीय अयनांश **23:35:38**

लग्न–चलित

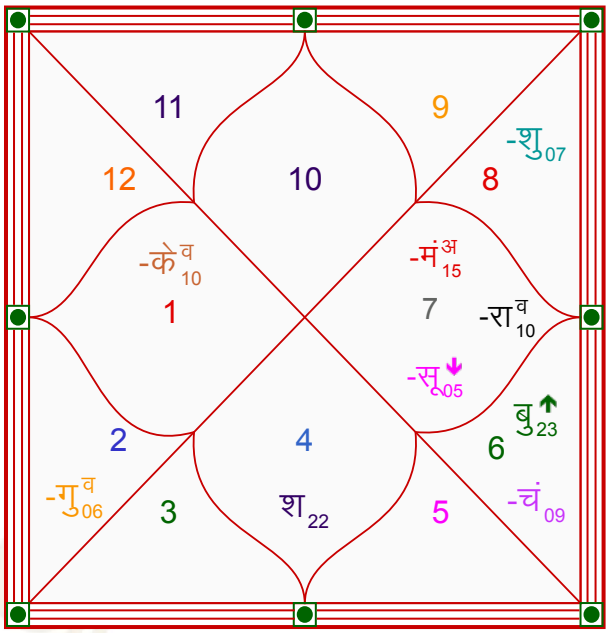

लग्न–चलित

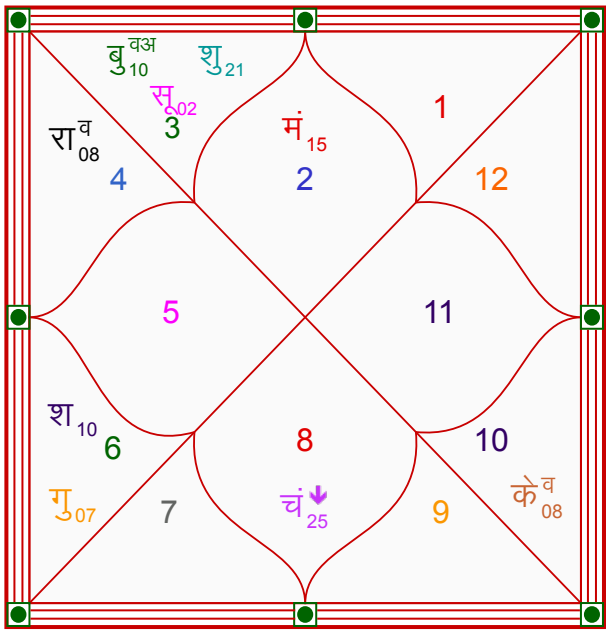

Boy

Girl

चन्द्र कुंडली

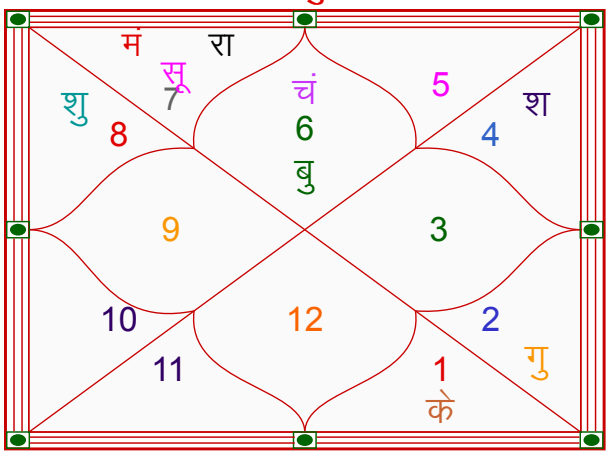

चन्द्र कुंडली

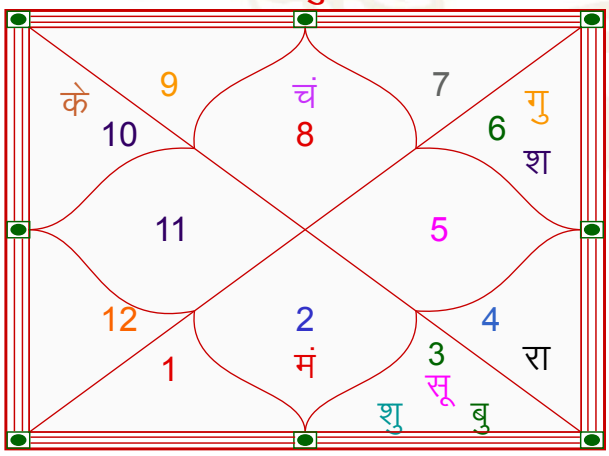

सूर्य कुंडली

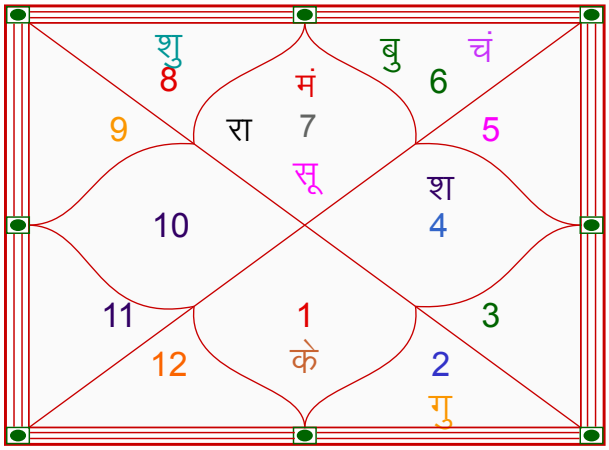

सूर्य कुंडली

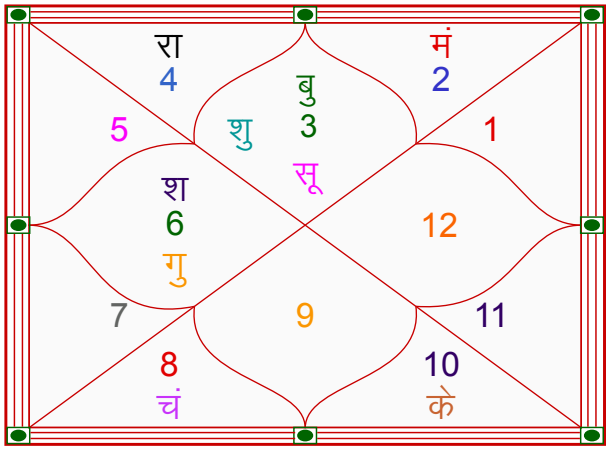

नवमांश कुंडली

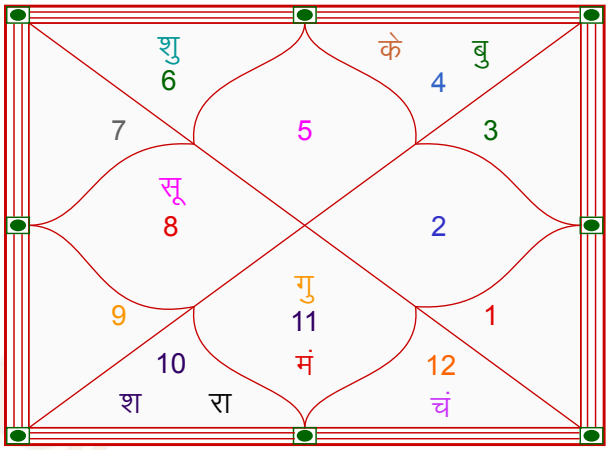

नवमांश कुंडली

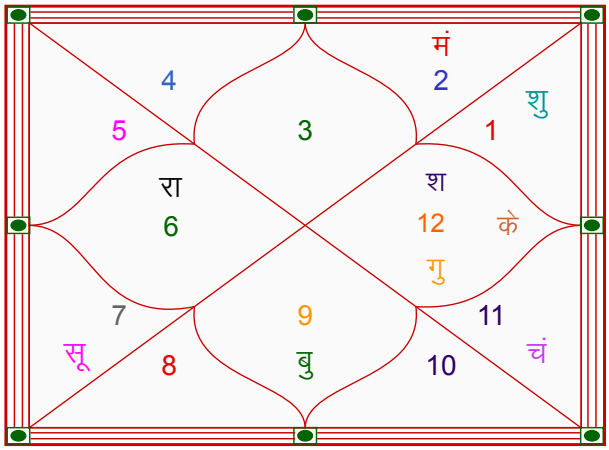

Boy

Girl

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 7 मास 14 दिन

के.पी. अयनांश : 23:25:50

फॉरच्युना : धनु 27:42:46

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	04:39:07	शुक्र	मंगल	शुक्र	बुध
चंद्र		कन्या	08:37:00	बुध	सूर्य	शुक्र	राहु
मंगल		तुला	15:06:17	शुक्र	राहु	केतु	शनि
बुध		कन्या	23:20:20	बुध	मंगल	मंगल	मंगल
गुरु	व	वृष	06:09:02	शुक्र	सूर्य	बुध	मंगल
शुक्र		वृश्चि	07:21:02	मंगल	शनि	केतु	केतु
शनि		कर्क	22:10:30	चंद्र	बुध	सूर्य	शुक्र
राहु	व	तुला	10:07:25	शुक्र	राहु	गुरु	मंगल
केतु	व	मेष	10:07:25	मंगल	केतु	शनि	शुक्र
हर्ष		तुला	13:27:37	शुक्र	राहु	बुध	चंद्र
नेप		वृश्चि	18:40:47	मंगल	बुध	केतु	शुक्र
प्लूटो		कन्या	18:48:33	बुध	चंद्र	बुध	मंगल

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	23:44:52	शनि	मंगल	मंगल	बुध
2	मीन	04:34:20	गुरु	शनि	शनि	चंद्र
3	मेष	09:33:41	मंगल	केतु	शनि	शनि
4	वृष	07:10:59	शुक्र	सूर्य	केतु	सूर्य
5	मिथु	00:58:58	बुध	मंगल	बुध	मंगल
6	मिथु	24:54:58	बुध	गुरु	बुध	मंगल
7	कर्क	23:44:52	चंद्र	बुध	मंगल	बुध
8	कन्या	04:34:20	बुध	सूर्य	शनि	राहु
9	तुला	09:33:41	शुक्र	राहु	गुरु	शुक्र
10	वृश्चि	07:10:59	मंगल	शनि	बुध	शनि
11	धनु	00:58:58	गुरु	केतु	शुक्र	शुक्र
12	धनु	24:54:58	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र

भाव कुंडली

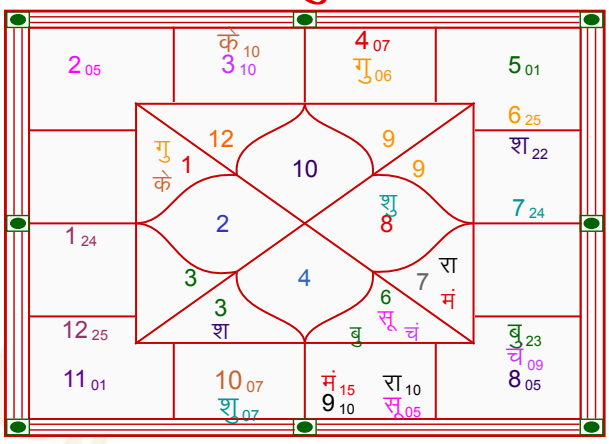

भोग्य दशा काल : बुध 6 वर्ष 7 मास 27 दिन

के.पी. अयनांश : 23:29:43

फॉरच्युना : वृश्चिक 10:46:47

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	02:11:10	बुध	मंगल	केतु	मंगल
चंद्र		वृश्चि	24:46:41	मंगल	बुध	राहु	शनि
मंगल		वृष	14:49:50	शुक्र	चंद्र	गुरु	शुक्र
बुध	व	मिथु	09:47:48	बुध	राहु	गुरु	शुक्र
गुरु		कन्या	07:33:16	बुध	सूर्य	केतु	शनि
शुक्र		मिथु	20:47:58	बुध	गुरु	गुरु	केतु
शनि		कन्या	09:37:11	बुध	सूर्य	शुक्र	बुध
राहु	व	कर्क	08:34:49	चंद्र	शनि	शुक्र	सूर्य
केतु	व	मक	08:34:49	शनि	सूर्य	शुक्र	राहु
हर्ष	व	वृश्चि	03:28:32	मंगल	शनि	शनि	शनि
नेप	व	वृश्चि	29:55:34	मंगल	बुध	शनि	गुरु
प्लूटो	व	कन्या	28:05:57	बुध	मंगल	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	18:11:17	शुक्र	चंद्र	बुध	शुक्र
2	मिथु	13:21:21	बुध	राहु	बुध	चंद्र
3	कर्क	08:00:38	चंद्र	शनि	केतु	बुध
4	सिंह	05:26:22	सूर्य	केतु	मंगल	शुक्र
5	कन्या	07:44:30	बुध	सूर्य	केतु	बुध
6	तुला	13:34:52	शुक्र	राहु	बुध	मंगल
7	वृश्चि	18:11:17	मंगल	बुध	बुध	गुरु
8	धनु	13:21:21	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र
9	मक	08:00:38	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
10	कुंभ	05:26:22	शनि	मंगल	सूर्य	केतु
11	मीन	07:44:30	गुरु	शनि	केतु	राहु
12	मेष	13:34:52	मंगल	शुक्र	शुक्र	शुक्र

भाव कुंडली

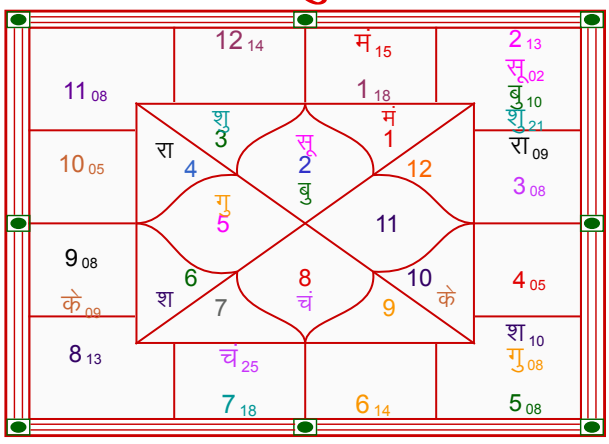

Boy Girl

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शुक्र– शनि–
2	गुरु–
3	सूर्य– मंगल– बुध– गुरु, केतु+
4	शुक्र–
5	बुध– शनि–
6	बुध– शुक्र, शनि+
7	चंद्र–
8	सूर्य, चंद्र+ बुध, गुरु, शनि+
9	सूर्य, मंगल+ बुध, शुक्र– राहु+
10	सूर्य– मंगल– बुध– शुक्र,
11	गुरु–
12	गुरु–

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र– शनि, केतु,
2	चंद्र– बुध– शुक्र,
3	चंद्र– मंगल– बुध, राहु,
4	सूर्य– गुरु+ शुक्र, शनि– केतु–
5	चंद्र– बुध– शनि, राहु,
6	शुक्र–
7	सूर्य– चंद्र, मंगल+
8	गुरु– शुक्र–
9	शनि– राहु– केतु,
10	शनि– राहु–
11	गुरु– शुक्र–
12	सूर्य+ मंगल,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 8, 9, 10-
चंद्र	7- 8+
मंगल	3- 9+ 10-
बुध	3- 5- 6- 8, 9, 10-
गुरु	2- 3, 8, 11- 12-
शुक्र	1- 4- 6, 9- 10,
शनि	1- 5- 6+ 8+
राहु	9+
केतु	3+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 4- 7- 12+
चंद्र	1, 2- 3- 5- 7,
मंगल	3- 7+ 12,
बुध	1, 2- 3, 5-
गुरु	1, 4+ 8- 11-
शुक्र	1- 2, 4, 6- 8- 11-
शनि	1, 4- 5, 9- 10-
राहु	3, 5, 9- 10-
केतु	1, 4- 9,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	राहु

Boy Girl

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

लग्न कुंडली

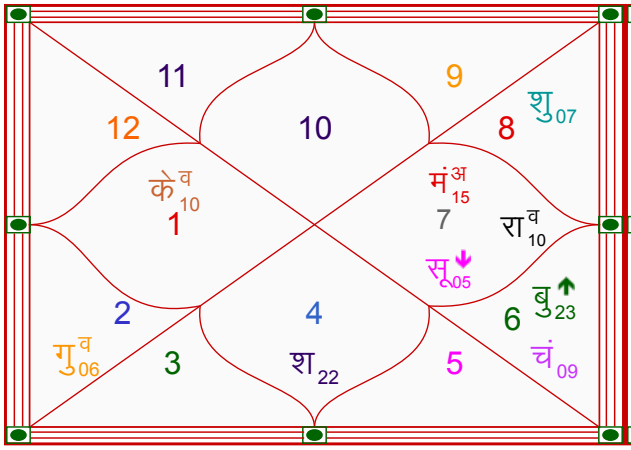

देह विचारः

लग्न कुंडली

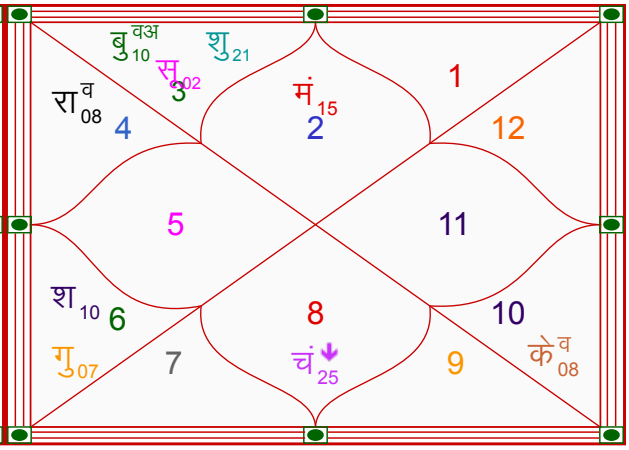

देह विचारः

होरा कुंडली

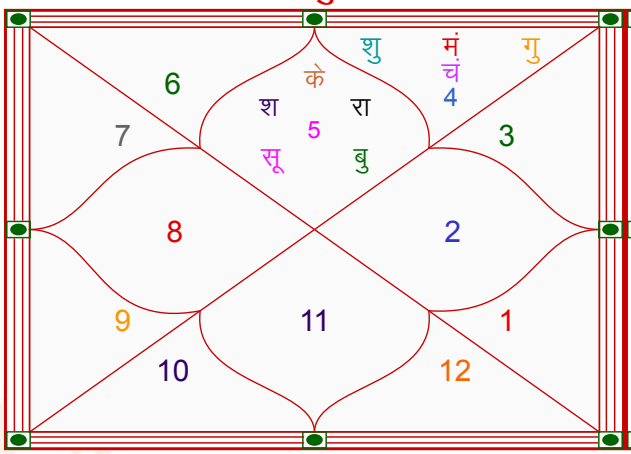

सम्पदाविचारः

होरा कुंडली

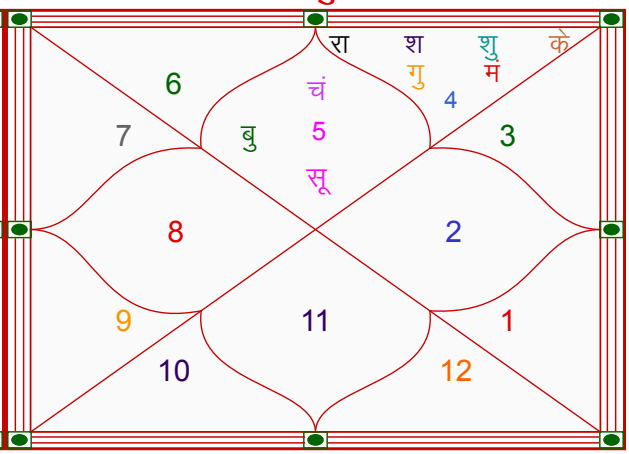

सम्पदाविचारः

Boy Girl

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

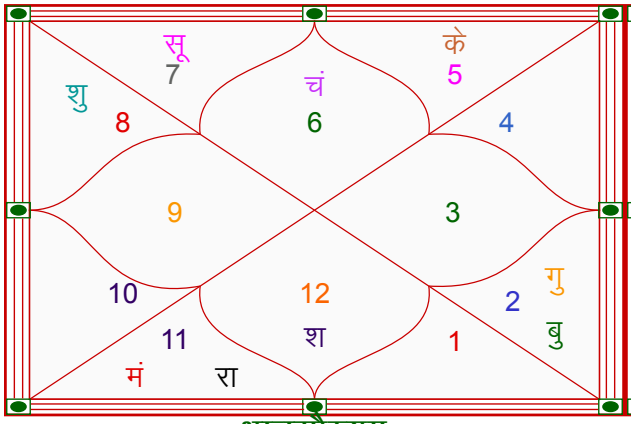

द्रेष्काण कुंडली

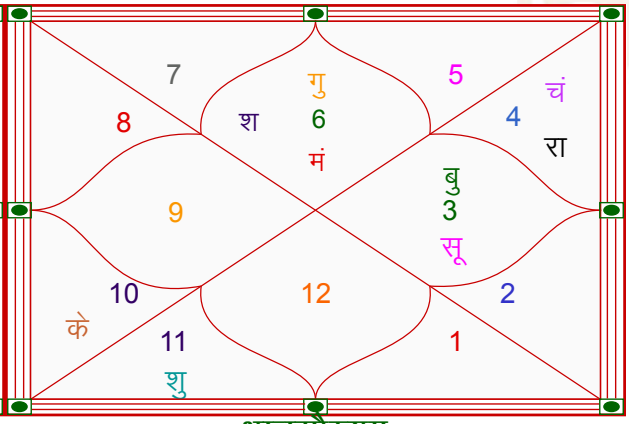

भ्रातृसौख्यम
चतुर्थांश कुंडली

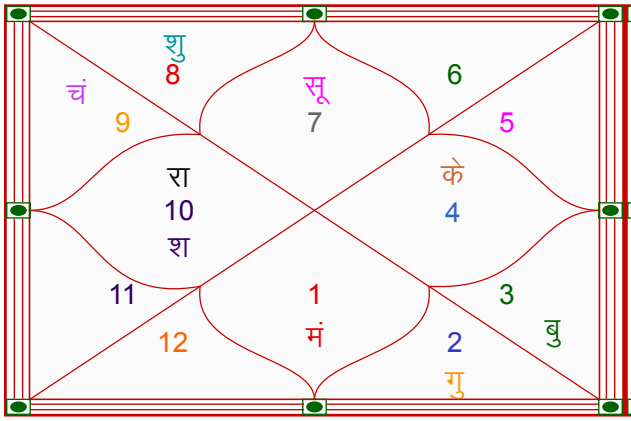

भ्रातृसौख्यम
चतुर्थांश कुंडली

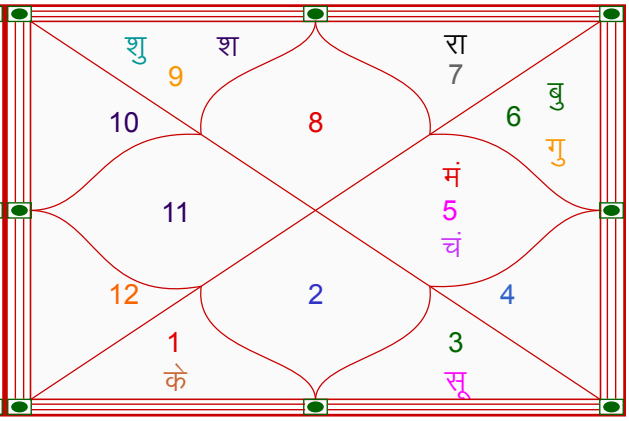

भाग्यविचारः
सप्तमांश कुंडली

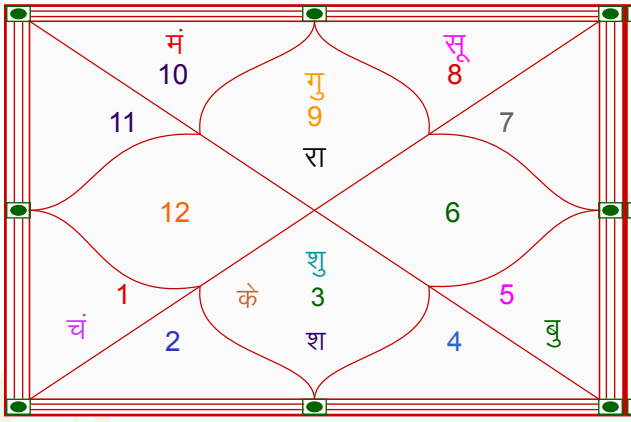

भाग्यविचारः
सप्तमांश कुंडली

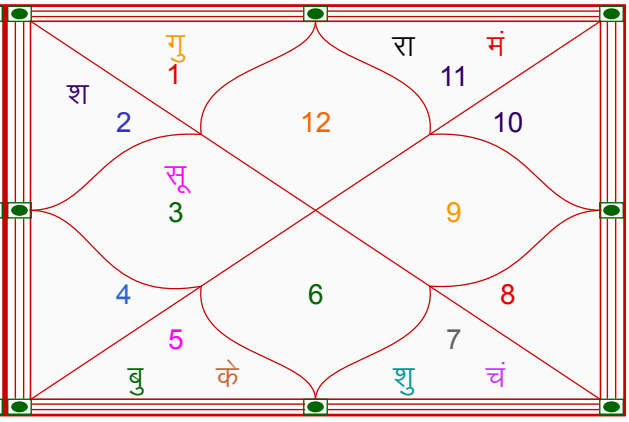

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

Boy Girl

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

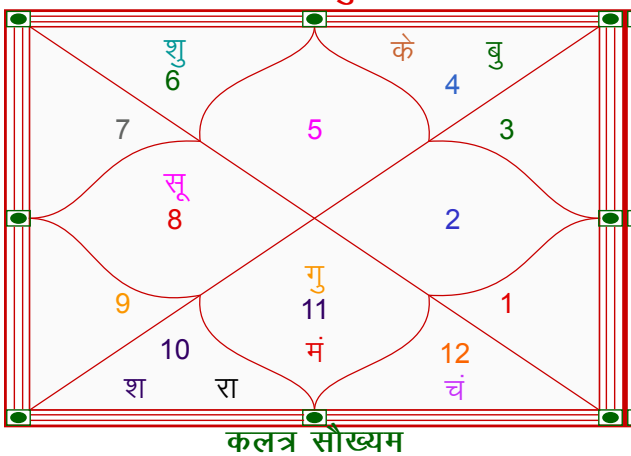

नवमांश कुंडली

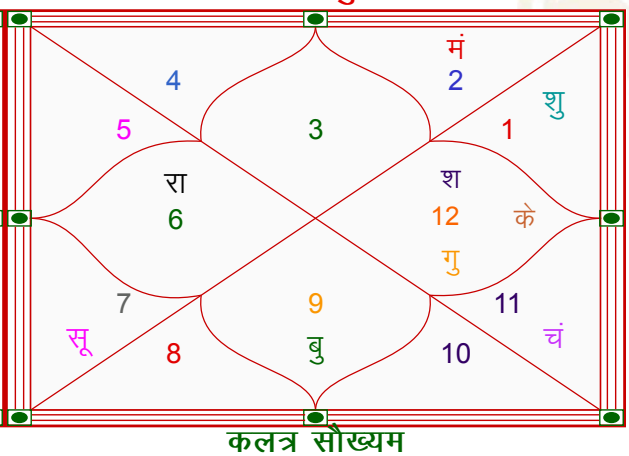

कलत्र सौख्यम
दशमांश कुंडली

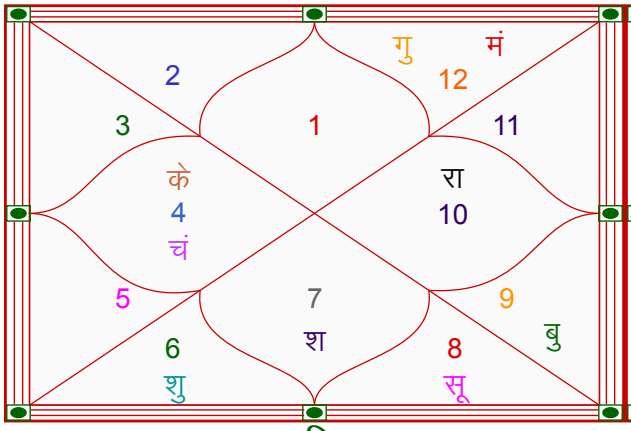

कलत्र सौख्यम
दशमांश कुंडली

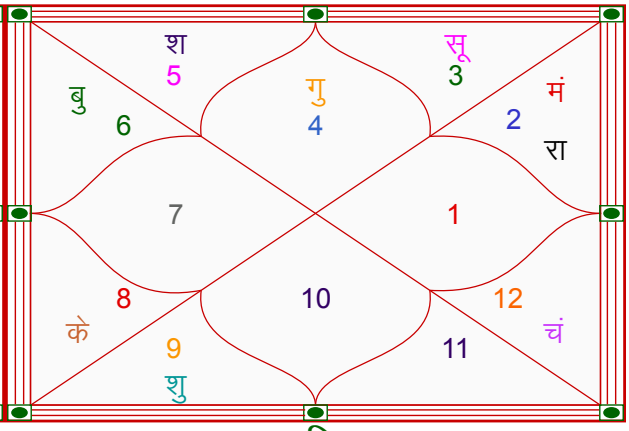

राज्यविचारः
द्वादशांश कुंडली

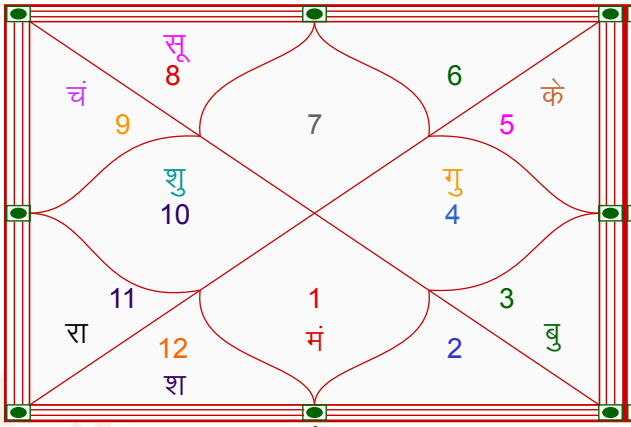

राज्यविचारः
द्वादशांश कुंडली

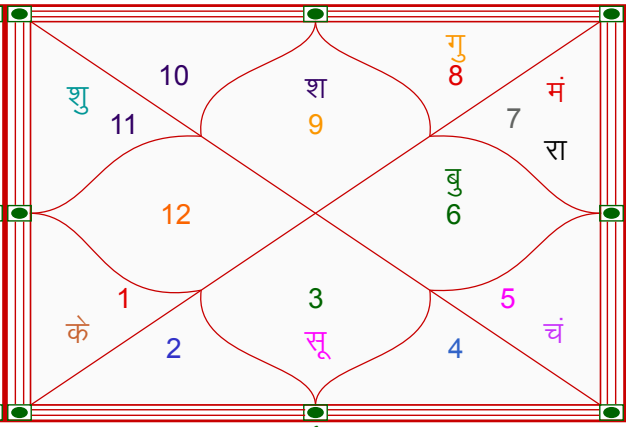

पितृसौख्यम

पितृसौख्यम

Boy

Girl

षोडशवर्ग चक्र

षोडशांश कुंडली

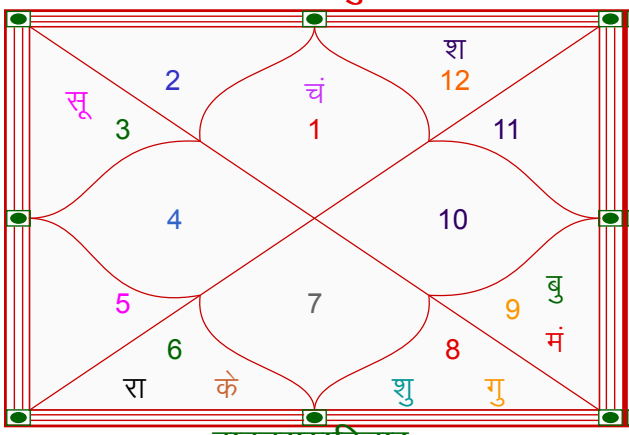

षोडशांश कुंडली

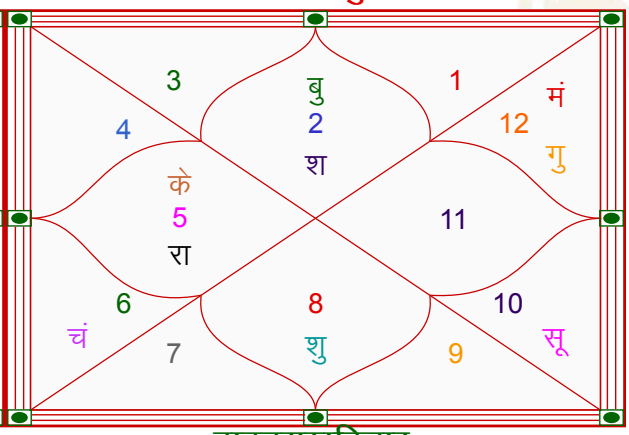

वाहनसुखविचारः
त्रिंशांश कुंडली

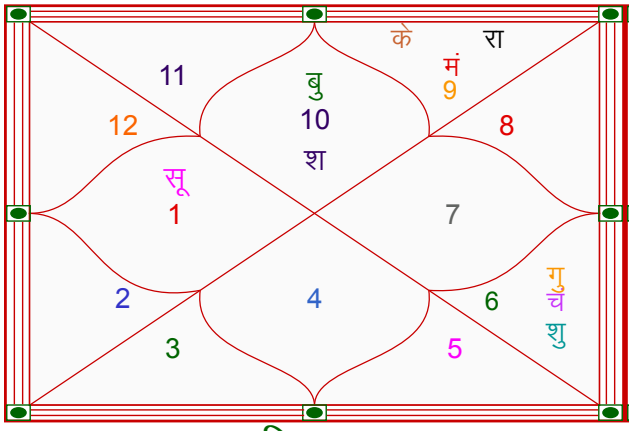

वाहनसुखविचारः
त्रिंशांश कुंडली

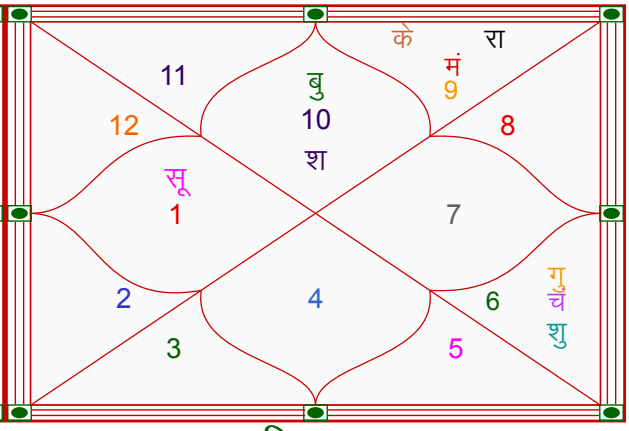

अरिष्टज्ञानम्
षष्ट्यंश कुंडली

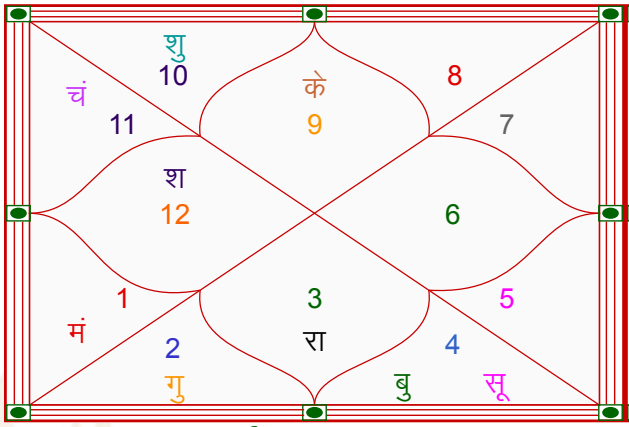

अरिष्टज्ञानम्
षष्ट्यंश कुंडली

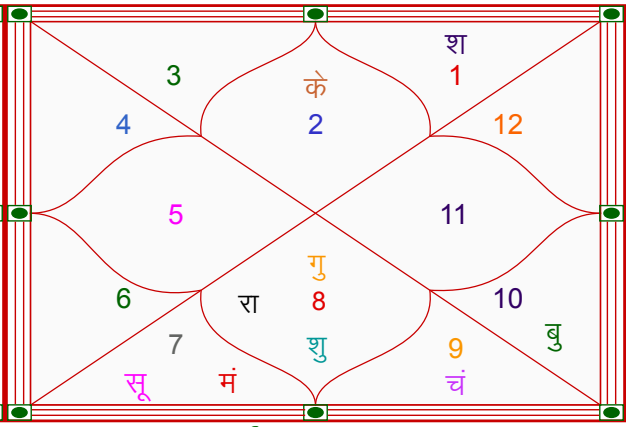

सर्वास्थितिविचारः

सर्वास्थितिविचारः

Boy Girl

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–––	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

पंचधा मैत्री - Boy

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	अतिमित्र	सम	मित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	–––	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	–––	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	–––	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	–––	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	–––	सम	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	–––	अतिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	–––

पंचधा मैत्री - Girl

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	–––	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	–––	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	–––	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	–––	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	–––	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	–––

Boy

Girl

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	**6**	**5**	**1**	**5**	**3**	**3**	**5**	**5**	**5**	**5**	**4**	**1**	**48**

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
कुल	**3**	**4**	**4**	**3**	**3**	**3**	**4**	**4**	**5**	**5**	**5**	**5**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
कुल	**4**	**1**	**6**	**5**	**2**	**4**	**7**	**2**	**5**	**4**	**5**	**4**	**49**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	**3**	**4**	**4**	**4**	**6**	**5**	**1**	**3**	**5**	**4**	**5**	**5**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	**5**	**4**	**1**	**4**	**5**	**4**	**4**	**2**	**2**	**5**	**2**	**1**	**39**

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
कुल	**4**	**3**	**3**	**4**	**2**	**3**	**4**	**2**	**2**	**3**	**4**	**5**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	**3**	**5**	**4**	**3**	**5**	**6**	**4**	**5**	**3**	**6**	**5**	**5**	**54**

बुध का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्ि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
कुल	**6**	**3**	**6**	**3**	**5**	**3**	**4**	**2**	**7**	**4**	**6**	**5**	**54**

Boy Girl

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

गुरू का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
कुल	**6**	**5**	**7**	**4**	**4**	**5**	**5**	**5**	**5**	**3**	**3**	**4**	**56**

गुरू का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
कुल	**5**	**4**	**6**	**4**	**3**	**6**	**7**	**4**	**3**	**5**	**5**	**4**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	**5**	**4**	**6**	**5**	**5**	**3**	**5**	**2**	**3**	**5**	**7**	**2**	**52**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
लग्न	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
कुल	**5**	**6**	**4**	**3**	**4**	**3**	**3**	**7**	**3**	**4**	**6**	**4**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
कुल	**4**	**3**	**4**	**4**	**4**	**2**	**2**	**3**	**3**	**5**	**3**	**2**	**39**

शनि का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
कुल	**3**	**2**	**3**	**1**	**5**	**5**	**4**	**5**	**3**	**1**	**5**	**2**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**3**	**4**	**5**	**2**	**2**	**5**	**6**	**4**	**4**	**5**	**4**	**5**	**49**

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**3**	**4**	**6**	**3**	**6**	**5**	**3**	**2**	**4**	**5**	**5**	**3**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

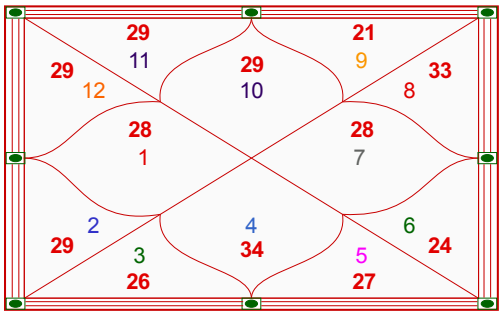

सर्वाष्टकवर्ग

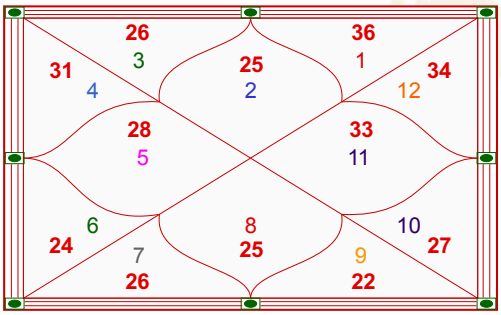

Boy

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	3	2	4	3	4	4	4	2	2	3	3	39
गुरु	4	6	5	7	4	4	5	5	5	5	3	3	56
मंगल	4	2	2	5	2	1	5	4	1	4	5	4	39
सूर्य	5	5	5	5	4	1	6	5	1	5	3	3	48
शुक्र	3	5	2	3	5	7	2	5	4	6	5	5	52
बुध	5	3	6	5	5	3	5	4	3	5	6	4	54
चंद्र	2	5	4	5	4	4	1	6	5	2	4	7	49
बिन्दु	**28**	**29**	**26**	**34**	**27**	**24**	**28**	**33**	**21**	**29**	**29**	**29**	**337**
रेखा	**28**	**27**	**30**	**22**	**29**	**32**	**28**	**23**	**35**	**27**	**27**	**27**	**335**

Girl

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	3	1	5	2	3	2	3	1	5	5	4	39
गुरु	4	3	5	5	4	5	4	6	4	3	6	7	56
मंगल	5	4	3	3	4	2	3	4	2	2	3	4	39
सूर्य	5	5	3	4	4	3	3	3	4	4	5	5	48
शुक्र	6	4	5	6	4	3	4	3	3	7	3	4	52
बुध	6	5	6	3	6	3	5	3	4	2	7	4	54
चंद्र	5	1	3	5	4	5	5	3	4	4	4	6	49
बिन्दु	**36**	**25**	**26**	**31**	**28**	**24**	**26**	**25**	**22**	**27**	**33**	**34**	**337**
रेखा	**20**	**31**	**30**	**25**	**28**	**32**	**30**	**31**	**34**	**29**	**23**	**22**	**335**

शोध्य पिंड - Boy

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	165	142	66	62	96	94	81
ग्रह पिंड	103	57	54	5	80	34	68
शोध्य पिंड	268	199	120	67	176	128	149

शोध्य पिंड - Girl

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	71	106	74	111	72	101	97
ग्रह पिंड	16	60	21	56	52	42	0
शोध्य पिंड	87	166	95	167	124	143	97

विंशोत्तरी दशा

सूर्य 0 वर्ष 8 मास 1 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
21/10/1976		23/06/1977		23/06/1987	
23/06/1977		23/06/1987		23/06/1994	
	00/00/0000	चंद्र	23/04/1978	मंगल	19/11/1987
	00/00/0000	मंगल	22/11/1978	राहु	07/12/1988
	00/00/0000	राहु	23/05/1980	गुरु	13/11/1989
	00/00/0000	गुरु	22/09/1981	शनि	23/12/1990
	00/00/0000	शनि	23/04/1983	बुध	20/12/1991
	00/00/0000	बुध	22/09/1984	केतु	17/05/1992
	00/00/0000	केतु	23/04/1985	शुक्र	17/07/1993
	21/10/1976	शुक्र	23/12/1986	सूर्य	22/11/1993
शुक्र	23/06/1977	सूर्य	23/06/1987	चंद्र	23/06/1994

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
23/06/1994		22/06/2012		22/06/2028	
22/06/2012		22/06/2028		23/06/2047	
राहु	05/03/1997	गुरु	11/08/2014	शनि	26/06/2031
गुरु	30/07/1999	शनि	21/02/2017	बुध	05/03/2034
शनि	05/06/2002	बुध	30/05/2019	केतु	14/04/2035
बुध	22/12/2004	केतु	05/05/2020	शुक्र	14/06/2038
केतु	10/01/2006	शुक्र	04/01/2023	सूर्य	27/05/2039
शुक्र	09/01/2009	सूर्य	23/10/2023	चंद्र	25/12/2040
सूर्य	04/12/2009	चंद्र	21/02/2025	मंगल	03/02/2042
चंद्र	05/06/2011	मंगल	28/01/2026	राहु	10/12/2044
मंगल	22/06/2012	राहु	22/06/2028	गुरु	23/06/2047

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
23/06/2047		22/06/2064		23/06/2071	
22/06/2064		23/06/2071		23/06/2091	
बुध	19/11/2049	केतु	19/11/2064	शुक्र	23/10/2074
केतु	16/11/2050	शुक्र	19/01/2066	सूर्य	23/10/2075
शुक्र	16/09/2053	सूर्य	27/05/2066	चंद्र	23/06/2077
सूर्य	23/07/2054	चंद्र	26/12/2066	मंगल	23/08/2078
चंद्र	23/12/2055	मंगल	24/05/2067	राहु	23/08/2081
मंगल	19/12/2056	राहु	10/06/2068	गुरु	23/04/2084
राहु	08/07/2059	गुरु	17/05/2069	शनि	23/06/2087
गुरु	13/10/2061	शनि	26/06/2070	बुध	23/04/2090
शनि	22/06/2064	बुध	23/06/2071	केतु	23/06/2091

बुध 6 वर्ष 9 मास 12 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
17/06/1981		30/03/1988		30/03/1995	
30/03/1988		30/03/1995		30/03/2015	
	00/00/0000	केतु	26/08/1988	शुक्र	30/07/1998
	00/00/0000	शुक्र	26/10/1989	सूर्य	30/07/1999
	00/00/0000	सूर्य	03/03/1990	चंद्र	30/03/2001
	00/00/0000	चंद्र	02/10/1990	मंगल	30/05/2002
	00/00/0000	मंगल	28/02/1991	राहु	30/05/2005
	17/06/1981	राहु	17/03/1992	गुरु	29/01/2008
राहु	14/04/1983	गुरु	21/02/1993	शनि	30/03/2011
गुरु	20/07/1985	शनि	02/04/1994	बुध	28/01/2014
शनि	30/03/1988	बुध	30/03/1995	केतु	30/03/2015

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
30/03/2015		30/03/2021		30/03/2031	
30/03/2021		30/03/2031		30/03/2038	
सूर्य	18/07/2015	चंद्र	28/01/2022	मंगल	26/08/2031
चंद्र	16/01/2016	मंगल	29/08/2022	राहु	13/09/2032
मंगल	23/05/2016	राहु	28/02/2024	गुरु	20/08/2033
राहु	17/04/2017	गुरु	29/06/2025	शनि	29/09/2034
गुरु	03/02/2018	शनि	28/01/2027	बुध	26/09/2035
शनि	16/01/2019	बुध	29/06/2028	केतु	22/02/2036
बुध	23/11/2019	केतु	28/01/2029	शुक्र	23/04/2037
केतु	30/03/2020	शुक्र	29/09/2030	सूर्य	29/08/2037
शुक्र	30/03/2021	सूर्य	30/03/2031	चंद्र	30/03/2038

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
30/03/2038		30/03/2056		30/03/2072	
30/03/2056		30/03/2072		30/03/2091	
राहु	10/12/2040	गुरु	18/05/2058	शनि	02/04/2075
गुरु	06/05/2043	शनि	28/11/2060	बुध	10/12/2077
शनि	12/03/2046	बुध	06/03/2063	केतु	19/01/2079
बुध	28/09/2048	केतु	10/02/2064	शुक्र	21/03/2082
केतु	17/10/2049	शुक्र	11/10/2066	सूर्य	03/03/2083
शुक्र	16/10/2052	सूर्य	30/07/2067	चंद्र	01/10/2084
सूर्य	10/09/2053	चंद्र	28/11/2068	मंगल	10/11/2085
चंद्र	12/03/2055	मंगल	04/11/2069	राहु	16/09/2088
मंगल	30/03/2056	राहु	30/03/2072	गुरु	30/03/2091

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
21/02/2025		28/01/2026		22/06/2028	
28/01/2026		22/06/2028		26/06/2031	
मंगल	13/03/2025	राहु	08/06/2026	शनि	13/12/2028
राहु	03/05/2025	गुरु	03/10/2026	बुध	18/05/2029
गुरु	17/06/2025	शनि	19/02/2027	केतु	21/07/2029
शनि	10/08/2025	बुध	23/06/2027	शुक्र	20/01/2030
बुध	28/09/2025	केतु	13/08/2027	सूर्य	16/03/2030
केतु	18/10/2025	शुक्र	06/01/2028	चंद्र	16/06/2030
शुक्र	13/12/2025	सूर्य	19/02/2028	मंगल	19/08/2030
सूर्य	30/12/2025	चंद्र	02/05/2028	राहु	31/01/2031
चंद्र	28/01/2026	मंगल	22/06/2028	गुरु	26/06/2031

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
29/06/2025		28/01/2027		29/06/2028	
28/01/2027		29/06/2028		28/01/2029	
शनि	29/09/2025	बुध	12/04/2027	केतु	11/07/2028
बुध	20/12/2025	केतु	12/05/2027	शुक्र	16/08/2028
केतु	22/01/2026	शुक्र	06/08/2027	सूर्य	26/08/2028
शुक्र	29/04/2026	सूर्य	01/09/2027	चंद्र	13/09/2028
सूर्य	28/05/2026	चंद्र	14/10/2027	मंगल	26/09/2028
चंद्र	15/07/2026	मंगल	13/11/2027	राहु	28/10/2028
मंगल	18/08/2026	राहु	30/01/2028	गुरु	25/11/2028
राहु	12/11/2026	गुरु	08/04/2028	शनि	29/12/2028
गुरु	28/01/2027	शनि	29/06/2028	बुध	28/01/2029

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
26/06/2031		05/03/2034		14/04/2035	
05/03/2034		14/04/2035		14/06/2038	
बुध	12/11/2031	केतु	29/03/2034	शुक्र	24/10/2035
केतु	09/01/2032	शुक्र	04/06/2034	सूर्य	21/12/2035
शुक्र	21/06/2032	सूर्य	25/06/2034	चंद्र	26/03/2036
सूर्य	09/08/2032	चंद्र	28/07/2034	मंगल	02/06/2036
चंद्र	30/10/2032	मंगल	21/08/2034	राहु	22/11/2036
मंगल	26/12/2032	राहु	21/10/2034	गुरु	25/04/2037
राहु	23/05/2033	गुरु	14/12/2034	शनि	25/10/2037
गुरु	01/10/2033	शनि	16/02/2035	बुध	07/04/2038
शनि	05/03/2034	बुध	14/04/2035	केतु	14/06/2038

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
28/01/2029		29/09/2030		30/03/2031	
29/09/2030		30/03/2031		26/08/2031	
शुक्र	09/05/2029	सूर्य	08/10/2030	मंगल	08/04/2031
सूर्य	09/06/2029	चंद्र	23/10/2030	राहु	30/04/2031
चंद्र	30/07/2029	मंगल	03/11/2030	गुरु	20/05/2031
मंगल	03/09/2029	राहु	30/11/2030	शनि	13/06/2031
राहु	03/12/2029	गुरु	24/12/2030	बुध	04/07/2031
गुरु	22/02/2030	शनि	22/01/2031	केतु	13/07/2031
शनि	30/05/2030	बुध	17/02/2031	शुक्र	07/08/2031
बुध	24/08/2030	केतु	28/02/2031	सूर्य	14/08/2031
केतु	29/09/2030	शुक्र	30/03/2031	चंद्र	26/08/2031

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
14/06/2038		27/05/2039		25/12/2040	
27/05/2039		25/12/2040		03/02/2042	
सूर्य	01/07/2038	चंद्र	14/07/2039	मंगल	18/01/2041
चंद्र	30/07/2038	मंगल	17/08/2039	राहु	19/03/2041
मंगल	19/08/2038	राहु	11/11/2039	गुरु	12/05/2041
राहु	10/10/2038	गुरु	28/01/2040	शनि	15/07/2041
गुरु	26/11/2038	शनि	28/04/2040	बुध	11/09/2041
शनि	20/01/2039	बुध	19/07/2040	केतु	04/10/2041
बुध	10/03/2039	केतु	22/08/2040	शुक्र	11/12/2041
केतु	30/03/2039	शुक्र	26/11/2040	सूर्य	31/12/2041
शुक्र	27/05/2039	सूर्य	25/12/2040	चंद्र	03/02/2042

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
26/08/2031		13/09/2032		20/08/2033	
13/09/2032		20/08/2033		29/09/2034	
राहु	23/10/2031	गुरु	28/10/2032	शनि	23/10/2033
गुरु	13/12/2031	शनि	21/12/2032	बुध	19/12/2033
शनि	12/02/2032	बुध	08/02/2033	केतु	12/01/2034
बुध	06/04/2032	केतु	28/02/2033	शुक्र	20/03/2034
केतु	28/04/2032	शुक्र	25/04/2033	सूर्य	10/04/2034
शुक्र	01/07/2032	सूर्य	12/05/2033	चंद्र	13/05/2034
सूर्य	21/07/2032	चंद्र	10/06/2033	मंगल	06/06/2034
चंद्र	22/08/2032	मंगल	30/06/2033	राहु	06/08/2034
मंगल	13/09/2032	राहु	20/08/2033	गुरु	29/09/2034

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
03/02/2042		10/12/2044		23/06/2047	
10/12/2044		23/06/2047		19/11/2049	
राहु	09/07/2042	गुरु	12/04/2045	बुध	26/10/2047
गुरु	25/11/2042	शनि	06/09/2045	केतु	16/12/2047
शनि	09/05/2043	बुध	15/01/2046	शुक्र	11/05/2048
बुध	03/10/2043	केतु	10/03/2046	सूर्य	24/06/2048
केतु	03/12/2043	शुक्र	11/08/2046	चंद्र	05/09/2048
शुक्र	24/05/2044	सूर्य	26/09/2046	मंगल	26/10/2048
सूर्य	15/07/2044	चंद्र	12/12/2046	राहु	07/03/2049
चंद्र	10/10/2044	मंगल	04/02/2047	गुरु	03/07/2049
मंगल	10/12/2044	राहु	23/06/2047	शनि	19/11/2049

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
29/09/2034		26/09/2035		22/02/2036	
26/09/2035		22/02/2036		23/04/2037	
बुध	19/11/2034	केतु	05/10/2035	शुक्र	03/05/2036
केतु	10/12/2034	शुक्र	29/10/2035	सूर्य	24/05/2036
शुक्र	08/02/2035	सूर्य	06/11/2035	चंद्र	29/06/2036
सूर्य	27/02/2035	चंद्र	18/11/2035	मंगल	24/07/2036
चंद्र	29/03/2035	मंगल	27/11/2035	राहु	26/09/2036
मंगल	19/04/2035	राहु	19/12/2035	गुरु	21/11/2036
राहु	12/06/2035	गुरु	08/01/2036	शनि	28/01/2037
गुरु	30/07/2035	शनि	01/02/2036	बुध	29/03/2037
शनि	26/09/2035	बुध	22/02/2036	केतु	23/04/2037

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
19/11/2049		16/11/2050		16/09/2053	
16/11/2050		16/09/2053		23/07/2054	
केतु	10/12/2049	शुक्र	07/05/2051	सूर्य	01/10/2053
शुक्र	08/02/2050	सूर्य	28/06/2051	चंद्र	27/10/2053
सूर्य	26/02/2050	चंद्र	22/09/2051	मंगल	14/11/2053
चंद्र	29/03/2050	मंगल	22/11/2051	राहु	31/12/2053
मंगल	19/04/2050	राहु	25/04/2052	गुरु	10/02/2054
राहु	12/06/2050	गुरु	10/09/2052	शनि	01/04/2054
गुरु	30/07/2050	शनि	21/02/2053	बुध	14/05/2054
शनि	26/09/2050	बुध	18/07/2053	केतु	02/06/2054
बुध	16/11/2050	केतु	16/09/2053	शुक्र	23/07/2054

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
23/04/2037		29/08/2037		30/03/2038	
29/08/2037		30/03/2038		10/12/2040	
सूर्य	30/04/2037	चंद्र	16/09/2037	राहु	25/08/2038
चंद्र	10/05/2037	मंगल	28/09/2037	गुरु	03/01/2039
मंगल	18/05/2037	राहु	30/10/2037	शनि	09/06/2039
राहु	06/06/2037	गुरु	27/11/2037	बुध	26/10/2039
गुरु	23/06/2037	शनि	31/12/2037	केतु	23/12/2039
शनि	13/07/2037	बुध	30/01/2038	शुक्र	04/06/2040
बुध	31/07/2037	केतु	12/02/2038	सूर्य	23/07/2040
केतु	08/08/2037	शुक्र	19/03/2038	चंद्र	14/10/2040
शुक्र	29/08/2037	सूर्य	30/03/2038	मंगल	10/12/2040

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
23/07/2054		23/12/2055		19/12/2056	
23/12/2055		19/12/2056		08/07/2059	
चंद्र	04/09/2054	मंगल	13/01/2056	राहु	08/05/2057
मंगल	05/10/2054	राहु	07/03/2056	गुरु	09/09/2057
राहु	21/12/2054	गुरु	25/04/2056	शनि	03/02/2058
गुरु	28/02/2055	शनि	21/06/2056	बुध	15/06/2058
शनि	21/05/2055	बुध	11/08/2056	केतु	09/08/2058
बुध	02/08/2055	केतु	01/09/2056	शुक्र	11/01/2059
केतु	02/09/2055	शुक्र	01/11/2056	सूर्य	26/02/2059
शुक्र	27/11/2055	सूर्य	19/11/2056	चंद्र	15/05/2059
सूर्य	23/12/2055	चंद्र	19/12/2056	मंगल	08/07/2059

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
10/12/2040		06/05/2043		12/03/2046	
06/05/2043		12/03/2046		28/09/2048	
गुरु	06/04/2041	शनि	18/10/2043	बुध	22/07/2046
शनि	23/08/2041	बुध	13/03/2044	केतु	14/09/2046
बुध	25/12/2041	केतु	13/05/2044	शुक्र	16/02/2047
केतु	14/02/2042	शुक्र	02/11/2044	सूर्य	04/04/2047
शुक्र	10/07/2042	सूर्य	24/12/2044	चंद्र	20/06/2047
सूर्य	23/08/2042	चंद्र	21/03/2045	मंगल	14/08/2047
चंद्र	04/11/2042	मंगल	21/05/2045	राहु	31/12/2047
मंगल	25/12/2042	राहु	24/10/2045	गुरु	04/05/2048
राहु	06/05/2043	गुरु	12/03/2046	शनि	28/09/2048

Boy

Girl

योगिनी दशा

सिद्धा 0 वर्ष 9 मास 11 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
21/10/1976		02/08/1977		02/08/1985	
02/08/1977		02/08/1985		03/08/1986	
	00/00/0000	संक	14/05/1979	मंग	13/08/1985
	00/00/0000	मंग	03/08/1979	पिंग	02/09/1985
	00/00/0000	पिंग	12/01/1980	धांय	02/10/1985
	00/00/0000	धांय	12/09/1980	भ्राम	12/11/1985
	00/00/0000	भ्राम	02/08/1981	भद्रि	02/01/1986
	00/00/0000	भद्रि	12/09/1982	उल्क	03/03/1986
	21/10/1976	उल्क	12/01/1984	सिद्ध	13/05/1986
उल्क	02/08/1977	सिद्ध	02/08/1985	संक	03/08/1986

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
03/08/1986		02/08/1988		03/08/1991	
02/08/1988		03/08/1991		03/08/1995	
पिंग	12/09/1986	धांय	01/11/1988	भ्राम	12/01/1992
धांय	12/11/1986	भ्राम	03/03/1989	भद्रि	02/08/1992
भ्राम	01/02/1987	भद्रि	02/08/1989	उल्क	03/04/1993
भद्रि	14/05/1987	उल्क	01/02/1990	सिद्ध	12/01/1994
उल्क	12/09/1987	सिद्ध	02/09/1990	संक	02/12/1994
सिद्ध	02/02/1988	संक	04/05/1991	मंग	12/01/1995
संक	13/07/1988	मंग	03/06/1991	पिंग	03/04/1995
मंग	02/08/1988	पिंग	03/08/1991	धांय	03/08/1995

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
03/08/1995		02/08/2000		03/08/2006	
02/08/2000		03/08/2006		02/08/2013	
भद्रि	13/04/1996	उल्क	02/08/2001	सिद्ध	13/12/2007
उल्क	11/02/1997	सिद्ध	03/10/2002	संक	03/07/2009
सिद्ध	01/02/1998	संक	02/02/2004	मंग	12/09/2009
संक	14/03/1999	मंग	02/04/2004	पिंग	01/02/2010
मंग	04/05/1999	पिंग	02/08/2004	धांय	02/09/2010
पिंग	13/08/1999	धांय	01/02/2005	भ्राम	13/06/2011
धांय	12/01/2000	भ्राम	02/10/2005	भद्रि	02/06/2012
भ्राम	02/08/2000	भद्रि	03/08/2006	उल्क	02/08/2013

भद्रिका 1 वर्ष 11 मास 28 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
17/06/1981		15/06/1983		15/06/1989	
15/06/1983		15/06/1989		15/06/1996	
	00/00/0000	उल्क	15/06/1984	सिद्ध	25/10/1990
	00/00/0000	सिद्ध	15/08/1985	संक	15/05/1992
	17/06/1981	संक	15/12/1986	मंग	25/07/1992
संक	24/01/1982	मंग	14/02/1987	पिंग	14/12/1992
मंग	16/03/1982	पिंग	15/06/1987	धांय	15/07/1993
पिंग	25/06/1982	धांय	15/12/1987	भ्राम	25/04/1994
धांय	25/11/1982	भ्राम	15/08/1988	भद्रि	16/04/1995
भ्राम	15/06/1983	भद्रि	15/06/1989	उल्क	15/06/1996

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
15/06/1996		15/06/2004		15/06/2005	
15/06/2004		15/06/2005		15/06/2007	
संक	26/03/1998	मंग	25/06/2004	पिंग	26/07/2005
मंग	15/06/1998	पिंग	15/07/2004	धांय	24/09/2005
पिंग	25/11/1998	धांय	15/08/2004	भ्राम	15/12/2005
धांय	26/07/1999	भ्राम	24/09/2004	भद्रि	26/03/2006
भ्राम	15/06/2000	भद्रि	14/11/2004	उल्क	26/07/2006
भद्रि	26/07/2001	उल्क	14/01/2005	सिद्ध	15/12/2006
उल्क	25/11/2002	सिद्ध	26/03/2005	संक	26/05/2007
सिद्ध	15/06/2004	संक	15/06/2005	मंग	15/06/2007

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
15/06/2007		15/06/2010		15/06/2014	
15/06/2010		15/06/2014		15/06/2019	
धांय	15/09/2007	भ्राम	25/11/2010	भद्रि	24/02/2015
भ्राम	15/01/2008	भद्रि	15/06/2011	उल्क	25/12/2015
भद्रि	15/06/2008	उल्क	14/02/2012	सिद्ध	14/12/2016
उल्क	14/12/2008	सिद्ध	24/11/2012	संक	24/01/2018
सिद्ध	15/07/2009	संक	15/10/2013	मंग	16/03/2018
संक	16/03/2010	मंग	24/11/2013	पिंग	25/06/2018
मंग	15/04/2010	पिंग	13/02/2014	धांय	25/11/2018
पिंग	15/06/2010	धांय	15/06/2014	भ्राम	15/06/2019

योगिनी दशा

सिद्धा 0 वर्ष 9 मास 11 दिन

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
02/08/2013		02/08/2021		03/08/2022	
02/08/2021		03/08/2022		02/08/2024	
संक	14/05/2015	मंग	13/08/2021	पिंग	12/09/2022
मंग	03/08/2015	पिंग	02/09/2021	धांय	12/11/2022
पिंग	12/01/2016	धांय	02/10/2021	भ्राम	01/02/2023
धांय	12/09/2016	भ्राम	12/11/2021	भद्रि	14/05/2023
भ्राम	02/08/2017	भद्रि	02/01/2022	उल्क	12/09/2023
भद्रि	12/09/2018	उल्क	03/03/2022	सिद्ध	02/02/2024
उल्क	12/01/2020	सिद्ध	13/05/2022	संक	13/07/2024
सिद्ध	02/08/2021	संक	03/08/2022	मंग	02/08/2024

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
02/08/2024		03/08/2027		03/08/2031	
03/08/2027		03/08/2031		02/08/2036	
धांय	01/11/2024	भ्राम	12/01/2028	भद्रि	13/04/2032
भ्राम	03/03/2025	भद्रि	02/08/2028	उल्क	11/02/2033
भद्रि	02/08/2025	उल्क	03/04/2029	सिद्ध	01/02/2034
उल्क	01/02/2026	सिद्ध	12/01/2030	संक	14/03/2035
सिद्ध	02/09/2026	संक	02/12/2030	मंग	04/05/2035
संक	04/05/2027	मंग	12/01/2031	पिंग	13/08/2035
मंग	03/06/2027	पिंग	03/04/2031	धांय	12/01/2036
पिंग	03/08/2027	धांय	03/08/2031	भ्राम	02/08/2036

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
02/08/2036		03/08/2042		02/08/2049	
03/08/2042		02/08/2049		02/08/2057	
उल्क	02/08/2037	सिद्ध	13/12/2043	संक	14/05/2051
सिद्ध	03/10/2038	संक	03/07/2045	मंग	03/08/2051
संक	02/02/2040	मंग	12/09/2045	पिंग	12/01/2052
मंग	02/04/2040	पिंग	01/02/2046	धांय	12/09/2052
पिंग	02/08/2040	धांय	02/09/2046	भ्राम	02/08/2053
धांय	01/02/2041	भ्राम	13/06/2047	भद्रि	12/09/2054
भ्राम	02/10/2041	भद्रि	02/06/2048	उल्क	12/01/2056
भद्रि	03/08/2042	उल्क	02/08/2049	सिद्ध	02/08/2057

भद्रिका 1 वर्ष 11 मास 28 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
15/06/2019		15/06/2025		15/06/2032	
15/06/2025		15/06/2032		15/06/2040	
उल्क	15/06/2020	सिद्ध	25/10/2026	संक	26/03/2034
सिद्ध	15/08/2021	संक	15/05/2028	मंग	15/06/2034
संक	15/12/2022	मंग	25/07/2028	पिंग	25/11/2034
मंग	14/02/2023	पिंग	14/12/2028	धांय	26/07/2035
पिंग	15/06/2023	धांय	15/07/2029	भ्राम	15/06/2036
धांय	15/12/2023	भ्राम	25/04/2030	भद्रि	26/07/2037
भ्राम	15/08/2024	भद्रि	16/04/2031	उल्क	25/11/2038
भद्रि	15/06/2025	उल्क	15/06/2032	सिद्ध	15/06/2040

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
15/06/2040		15/06/2041		15/06/2043	
15/06/2041		15/06/2043		15/06/2046	
मंग	25/06/2040	पिंग	26/07/2041	धांय	15/09/2043
पिंग	15/07/2040	धांय	24/09/2041	भ्राम	15/01/2044
धांय	15/08/2040	भ्राम	15/12/2041	भद्रि	15/06/2044
भ्राम	24/09/2040	भद्रि	26/03/2042	उल्क	14/12/2044
भद्रि	14/11/2040	उल्क	26/07/2042	सिद्ध	15/07/2045
उल्क	14/01/2041	सिद्ध	15/12/2042	संक	16/03/2046
सिद्ध	26/03/2041	संक	26/05/2043	मंग	15/04/2046
संक	15/06/2041	मंग	15/06/2043	पिंग	15/06/2046

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
15/06/2046		15/06/2050		15/06/2055	
15/06/2050		15/06/2055		15/06/2061	
भ्राम	25/11/2046	भद्रि	24/02/2051	उल्क	15/06/2056
भद्रि	15/06/2047	उल्क	25/12/2051	सिद्ध	15/08/2057
उल्क	14/02/2048	सिद्ध	14/12/2052	संक	15/12/2058
सिद्ध	24/11/2048	संक	24/01/2054	मंग	14/02/2059
संक	15/10/2049	मंग	16/03/2054	पिंग	15/06/2059
मंग	24/11/2049	पिंग	25/06/2054	धांय	15/12/2059
पिंग	13/02/2050	धांय	25/11/2054	भ्राम	15/08/2060
धांय	15/06/2050	भ्राम	15/06/2055	भद्रि	15/06/2061

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

3	मूलांक	8
9	भाग्यांक	6
3, 5, 7, 9	मित्र अंक	1, 2, 8, 6
1, 4, 8	शत्रु अंक	3, 7, 9
21,30,39,48,57	शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुक्र, शनि, बुध	शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुक्र, शनि, बुध	शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
वृष, मिथुन	मित्र राशि	कर्क, सिंह
मेष, कन्या, वृश्चिक	मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
गणेश	अनुकूल देवता	शिव
नीलम	शुभ रत्न	हीरा
जमुनिया, बिलौर	शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
पन्ना	भाग्य रत्न	नीलम
लौह	शुभ धातु	रजत
काला	शुभ रंग	रजत
पश्चिम	शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
संध्या	शुभ समय	सूर्योदय
कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह	दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
उड़द	दान अन्न	चावल
तेल	दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Boy

जीवन रत्नः	नीलम	दम्पति, स्वास्थ्य, धन
भाग्य रत्नः	पन्ना	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
कारक रत्नः	हीरा	धनार्जन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति

Girl

जीवन रत्नः	हीरा	धन, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम	सन्तति सुख, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना	धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	लहसुनिया	भाग्योदय, सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/1977-01/11/1979
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/1979-05/10/1982
साढेसाती तृतीय ढैया	05/10/1982-21/12/1984
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/12/1987-20/03/1990
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/04/1998-05/06/2000

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-02/11/2014
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/01/2017-18/01/2020
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2041-02/12/2043
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2046-20/07/2049
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/10/1982-21/12/1984
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-16/12/1987
साढेसाती तृतीय ढैया	16/12/1987-20/03/1990
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/1993-10/08/1995
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/07/2002-05/09/2004

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-02/11/2014
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती तृतीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/05/2032-06/07/2034

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2041-02/12/2043
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती तृतीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/07/2061-15/02/2064

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दाम्पत्य कलह
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	धन

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Boy

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना–नानी, दादा–दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता–पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी–कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी–कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी–व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय–समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय–समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या– 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।

4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर – ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय–समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि–विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे – कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Girl

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Boy Girl

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	––	जातीय कर्म
वश्य	मानव	कीटक	2	1.00	––	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	––	भाग्य
योनि	गौ	मृग	4	3.00	––	यौन विचार
मैत्री	बुध	मंगल	5	0.50	––	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	कन्या	वृश्चिक	7	7.00	––	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य / संतान
कुल :			**36**	**13.00**		

कुल : 13 / 36

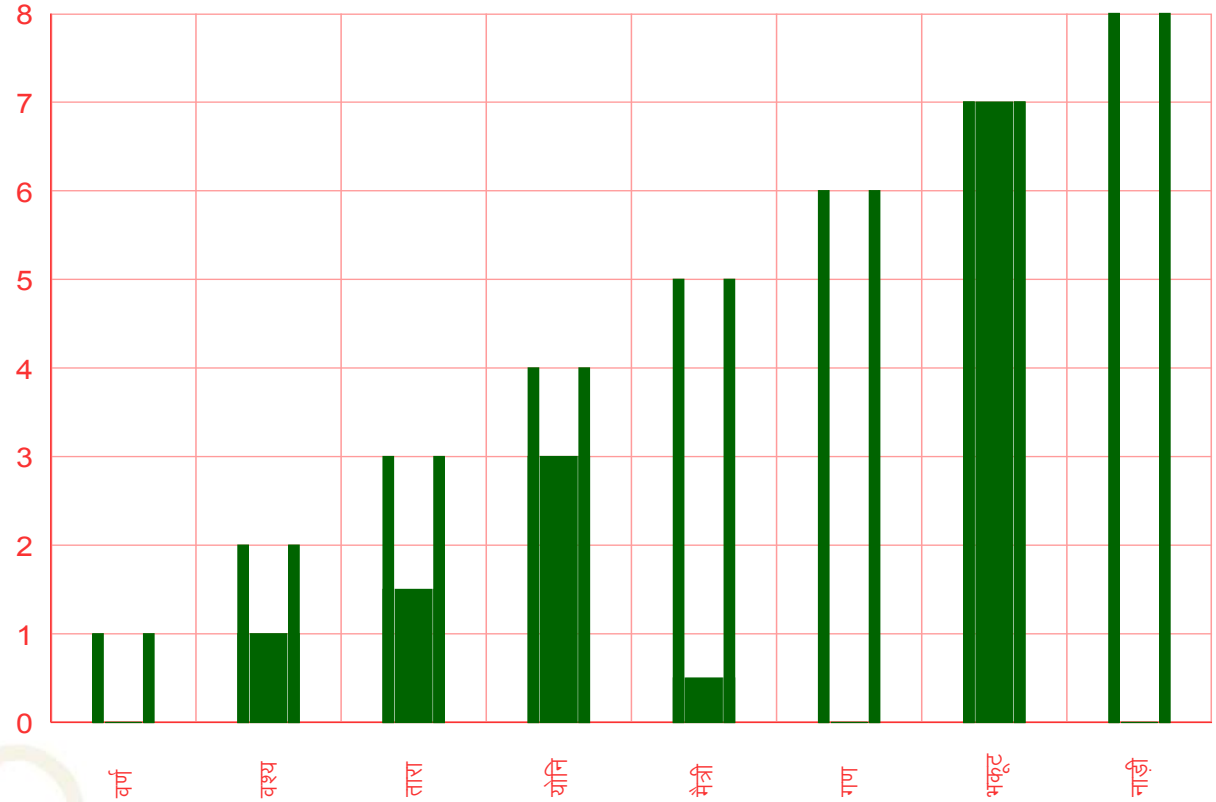

अष्टकूट मिलान

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न–2 है।

Boy का वर्ग मूषक है तथा Girl का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Boy और Girl का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Boy मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

Girl मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

Boy तथा Girl में मंगलीक मिलान ठीक नही है।

निष्कर्ष

मंगलीक एवं अष्टकूट गुण न मिलने के कारण दोनों का मिलान बिल्कुल ठीक नहीं हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

Boy की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या तथा Girl की राशि जल तत्व युक्त वृश्चिक राशि है। पृथ्वी एवं जल तत्व में नैसर्गिक समता होने के कारण Boy और Girl के मध्य स्वाभाविक समानताएं विद्यमान होंगी जिससे दाम्पत्य संबधों में मधुरता रहेगी। अतः यह मिलान सामान्यतया अच्छा रहेगा।

Boy की राशि का स्वामी बुध तथा Girl की राशि का स्वामी मंगल परस्पर शत्रु एवं समराशियों में स्थित है। सुखी वैवाहिक जीवन के लिए यह ग्रह स्थिति विशेष अनुकूल नहीं होती। इसके प्रभाव से Boy और Girl के परस्पर संबधों में तनाव रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे परस्पर संबधों में कटुता एवं मतभेद रहेंगे। अतः यदि ये एक दूसरे की आलोचना करने या कमियों को गिनना छोड़ दें तो जीवन में सुख के क्षणों की प्राप्ति हो सकती है।

Boy एवं Girl की राशि परस्पर तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से इनका एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति एवं सहयोग का भाव रहेगा तथा समर्पण की भावना भी विद्यमान रहेगी जिससे आपसी संबधों में मधुरता रहेगी। अतः वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही Boy और Girl की आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता रहेगी तथा जीवन में आवश्यक सुखोपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

Boy का वश्य मानव तथा Girl का वश्य कीट है मानव एवं कीट के मध्य नैसर्गिक शत्रुता एवं विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में असमानता होगी एवं शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताओं में भी अंतर रहेगा। अतः काम संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

Boy का वर्ण वैश्य एवं Girl का वर्ण ब्राह्मण है। अतः Boy की प्रवृति धनार्जन में प्रवृत रहेगी तथा वणिक बुद्धि से अपने समस्त कार्यो को सम्पन्न करेंगी लेकिन Girl शैक्षणिक एवं धार्मिक कार्यो में रूचिशील रहेंगी फलतः कार्य क्षमताओं में असमानता का भाव यदा कदा दृष्टि गोचर होगा।

धन

Boy और Girl की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। Boy और Girl की राशि तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उनकी आय में नित्य वृद्वि होगी जिससे अर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी। साथ ही मंगल का प्रभाव भी सम रहेगा। अतः धनार्जन होता रहेगा।

Girl एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः उन्हें अचानक धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना होगी। यह लाटरी या सटटे या किसी अन्य माध्यम से हो सकता है। साथ ही पैतृक सम्पति या जायदाद भी उनको मिलेगी जिससे दम्पति धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

Boy और Girl दोनों ही आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है। अतः इन्हें नाड़ी दोष से कष्ट की अनुभूति होगी। आद्य नाड़ी का विशेष प्रभाव Boy के स्वास्थ्य पर होगा। इसके प्रभाव से पक्षाघात आदि से वे कष्ट प्राप्त करेंगे तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की खुशी में अल्पता रहेगी। साथ ही मंगल के दुष्प्रभाव से भी Boy को स्वास्थ्य संबधी परेशानियां रहेगी फलतः वे धातु संबंधी रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे। इससे उनकी संभोग शक्ति भी प्रभावित होगी जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह उत्पन्न होगा एवं परस्पर असन्तुष्टि का भाव रहेगा। अतः इसके अशुभ फलों को दूर करने के लिए उन्हें नित्य हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। रहेगा। वैसे सामान्यतया ऐसी स्थिति में विवाह की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Boy और Girl का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Boy और Girl के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Girl के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Girl को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Girl को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Boy और Girl सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्व वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Boy और Girl का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल–सुश्री

Girl के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Girl अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से Girl पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Girl अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल–श्री

Boy के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में Boy के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण Boy के प्रति सामान्य ही रहेगा।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Boy का वर्ण वैश्य है तथा Girl का वर्ण ब्राह्मण है। क्योंकि Girl का वर्ण Boy के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। Girl अति अहंकारी, शाहखर्च एवं दिखावा करने वाली होगी। Girl को हमेशा यह महसूस होता रहेगा कि उसका पति निम्न दर्जे का है तथा बहुत कम कमाता है। इस कारण से उसमें निराशा की भावना घर कर कर सकती है।

वश्य

Boy का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं Girl का वश्य कीट है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। फलस्वरूप Boy एवं Girl दोनों के बीच हितों का टकराव होता रहेगा साथ ही दोनों के बीच आपसी सहयोग, समझ एवं सामंजस्य का पूर्णतः अभाव बना रहेगा। कभी–कभी दोनों एक–दूसरे के शत्रु भी बन सकते हैं जिससे प्रगति एवं समृद्धि बाधित होती है। दोनों के बीच घमासान चलता रहेगा तथा तनाव एवं संदेह का माहौल कायम हो सकता है।

तारा

Boy की तारा क्षेम तथा Girl की तारा वध है। Girl की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह Boy एवं Girl दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। Girl अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

Boy की योनि गौ है तथा Girl की योनि मृग है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग– अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी– कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी–कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है।

परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Boy का राशि स्वामी Girl के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि Girl का राशि स्वामी Boy के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई–झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी–कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

Boy का गण मनुष्य तथा Girl का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। अतः Girl का निर्दयी, निष्ठुर एवं कड़ा स्वभाव रहेगा जिसके कारण Boy एवं उसके परिवार के सदस्यों का जीवन कष्टपूर्ण हो सकता है। साथ ही पति–पत्नी के बीच अक्सर लड़ाई–झगड़ा बना रह सकता है। जिसके कारण तलाक एवं मुकदमे की संभावना भी बन सकती है।

भकूट

Boy से Girl की राशि तृतीय भाव में स्थित है तथा Girl से Boy की राशि एकादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण Boy अति महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा अच्छा कमाने वाले होंगे। दूसरी ओर Girl सद्गुणी, परिश्रमी, सहयोगी एवं दयालु होंगी तथा अपने पति की हर क्षेत्र में हर संभव सहायता करेंगी। दोनों के बीच मधुर तालमेल, एक–दूसरे की अच्छी समझ होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दोनों एक–दूसरे के लिए ही बने हों।

नाड़ी

Boy की नाड़ी आद्य है तथा Girl की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Boy एवं Girl दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण

की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

अंक ज्योतिष फल

Boy

आपका जन्म दिनांक 21 हैं। दो एवं एक के योग से आपका मूलांक 3 होता है। मूलांक तीन का अधिपति गुरु ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा एक का सूर्य है। अतः आपके जीवन में गुरु, चन्द्र तथा सूर्य ग्रह का शुभ–अशुभ प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी गुरु के प्रभाव से आप एक विद्वान व्यक्ति कहलायेंगे। विद्या के क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। धर्म–कर्म के कार्यों में रुचि रखेंगे। अधिक आयु पर आप आध्यात्म के क्षेत्र में चले जायेंगे। आप एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति रहेंगे एवं अपने अधीनस्थों से अपेक्षा रखेंगे कि वह भी अनुशासन में रहें । आप काम में शिथिलता या देरी पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपके मातहत आपके विरोधी होंगे।

सूर्य के प्रभाव से आप एक दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति होंगे। स्वभाव में हठीपन भी रहेगा एवं आप अपने कार्यक्षेत्र में सूर्य के समान ही चमकेंगे। लेकिन चन्द्र प्रभाव से कभी कभी अंधेरे का सामना करना पड़ेगा। इससे आपके मन में निराशा के भाव आयेंगे। आपका जीवन सन्तुलित रहेगा एवं ऐसे कार्यों में आपका मन लगेगा जहाँ कार्य ईमानदारी से होता हो। आप स्वयं अपनी मेहनत तथा सच्चाई पर भरोसा करेंगे और इसी के सहारे सफलताएं अर्जित करेंगे।

आपकी ऐसे कार्यों में रुचि रहेगी जहाँ बुद्धिजन्य कार्य होता हो। लेखन, पठन–पाठन, भाषण, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य करने पर आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। सूर्य, चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आप अपने जीवन में उच्चता को अवश्य प्राप्त करेंगे एवं आपकी अन्तिम अवस्था काफी खुशमय रहेगी।

Girl

आपका जन्म दिनांक 17 है। एक एवं सात के योग से आपका मूलांक 8 होता है। आठ मूलांक का स्वामी शनि है। अंक एक का सूर्य तथा सात का भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून है। इन तीनों ग्रहों का प्रभाव आपके जीवन में दृष्टिगोचर होगा। मूलांक 8 के स्वामी शनि प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे–धीरे होगी। आपके जीवन में संघर्ष अधिक रहेंगे एवं प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने के बाद अवरोध आयेंगे। जिन्हें आप मेहनत एवं धैर्य से पार कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

निराशा एवं आलस्य दो अवगुण आपकी प्रगति के बाधक रहेंगे। अतः किसी भी कार्य की असफलता से निराश न हों तथा दुबारा प्रयत्न करें, सफलता मिलेगी। कार्य में कर्म के सिद्धांत को मानते हुये आलस्य से दूर रहना सफलता की कुंजी रहेगा। अंक एक के स्वामी सूर्य एवं सात के केतु या नेपच्यून के प्रभाव से आपकी कल्पना शक्ति, विचार शक्ति अच्छी रहेगी। आप में दूसरों को समझनें की शक्ति अच्छी होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान भी अच्छा रहेगा। सूर्य प्रभाव से आपका नाम स्थायी प्रसिद्धि को प्राप्त करेगा। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपको यश तथा लाभ प्राप्त होगा।

उच्च वर्ग में आप लोकप्रिय होंगी एवं उच्चवर्ग से लाभ प्राप्त करेंगी। आपकी इच्छा शक्ति दृढ़ रहेगी एवं अपनी बात पर अडिग रहने की प्रवृत्ति आप में पाई जायेगी। आप थोड़ी हठी होंगी। हठ की यह प्रवृत्ति यदाकदा आपको हानि भी पहुँचायेगी। अतः जहाँ तक हो सके आप अपने हठ पर सन्तुलन रखें एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। सूर्य केतु शनि ग्रहों के प्रभाव से आप अपने जीवन में एक सफल महिला होंगी। आपकी ख्याति अच्छी रहेगी तथा दूसरों के लिये उदाहरण का कार्य करेंगी।

Boy

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार– व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हूकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

Girl

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगी। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन–मन एवं धन का व्यय करेंगी। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज–सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण की शौकीन रहेंगी। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान–शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा–कदा कड़की के दिनों में चल रही हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनती हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

लग्न फल

Boy

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में मकर लग्न के उदय काल में हुआ था। जन्म लग्न के समय पूर्वीय क्षितिज पर सिंह राशि का नवमांश एवं कन्या राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादि के प्रभाव की ज्योतिषीय आकृति से यह दृष्टिगत हो रहा है कि आपके जन्म प्रभाव के फलस्वरूप आपका जीवन धन, प्रतिष्ठा एवं शक्ति से संपन्न गुणों का प्रतिनिधित्व करायेगा। परंतु आप मन में ऐसी भावना लेकर निश्चिंत न होंवे कि क्योंकि आपके जन्म का जो प्रभाव है वह आपकी परिस्थिति के अनुकूल है इसलिए सब कुछ स्वतः ठीक हो जाएगा। ऐसा न समझे। आपको सफलता की प्राप्ति हेतु कठिन श्रम के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। अर्थात् आपकी सफलता का श्रेय आपके परिश्रम और आपकी सच्ची लग्न पर निर्भर करता है।

आपकी महत्वकांक्षा के प्रति आपकी कार्यदक्षता एक अनुग्रहणीय गुण से युक्त है। आप अच्छी प्रकार यह जानते हैं कि आप अपने अंतर्ज्ञान की शक्ति से कुशाग्र बुद्धिमत्ता द्वारा अपनी योजना के प्रति समर्पित होकर उस कार्य योजना को लाभदायक एवं धन प्रदायक बना कर प्रस्तुत कर सकते हैं जो सुदृढ़ सुनिश्चियात्मक है। यदि आप ऐसा करें तो इसकी संभावना से विजयोल्लासित हो सकते हैं।

इस प्रकार आप लाभजनक स्थिति में आ सकते हैं। आप जीवन के 19 वें वर्ष से 24 वें वर्ष की आयु के मध्य आपकी उन्नति एवं आपका भविष्य अन्यों की अपेक्षा उत्तम एवं प्रमुख नक्षत्र की भांति चमत्कृत होगा। आप अपनी वृद्धा अवस्था काल सहजतापूर्वक धन संचय संबंधी भवन का निर्माण कर सकते हैं।

आपकी पत्नी आपकी सीखभरी गुण युक्त निर्देशन प्राप्त करेंगी। क्योंकि लोग आपके पास पहुंच कर महत्वपूर्ण विषयों पर निर्देशन प्राप्त करेंगे। आप मात्र उचित सम्मति ही नहीं प्रदान करेंगे बल्कि आप जरूरतमंद लोगों को धन संबंधी उचित स्रोत की भी व्यवस्था करेंगे। आप निश्चय पूर्वक दान सेवी संस्था को दान भी देंगे। क्योंकि आपका झुकाव धर्म की ओर भी रहता है। इस कारणवश आप अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण एवं परिदर्शन भी करेंगे।

आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ी बहुत सतर्कता बरतनी चाहिए। यद्यपि आप स्वास्थ्य प्रसन्न एवं दीर्घजीवी प्राणी हैं। परंतु ऐसी आशंका है कि आप संबंधित रोगादि से प्रभावित भी हो सकते हैं। यथा चर्मरोग, अपाचन प्रक्रिया एवं क्षयरोगादि। इस संबंध में आप रूचिपूर्वक इस विधान को अंगीकृत करते हैं कि स्वस्थ्य रहने के लिए सतर्कता बरतनी चाहिए। आप सदैव उन संभावित दुर्घटनादि की अनदेखी न करें। जो सामान्य रूप से शरीर में छोटी–मोटी चोटादि होते रहते हैं।

आपके लिए रंगों में पीला एवं क्रीम रंग त्याज्य है। परंतु आपके लिए सफेद, लाल, काला एवं नीला रंग सर्वथा अनुकूल है।

आपके लिए अंकों में 3 अंक सर्वथा प्रतिकूल है। परंतु आपके लिए अनुकूल अंक 6, 8 एवं 9 अंक है। यह सभी महत्वपूर्ण कार्यो के संपादन हेतु लाभजनक है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सर्वोत्तम दिन है। परंतु रविवार, सोमवार एवं गुरुवार का दिन आपके लिए सर्वथा प्रतिकूल है।

Girl

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में वृष लग्न के उदय काल हुआ था। जन्मकाल के समय ही मिथुन के नवमांश में कन्या द्रेष्काण भी उदित था। इस विन्दु पर जन्म के फलस्वरूप आपका जीवन सुखद, आरामदायक धन धान्य से पूर्ण आनंददायक जीवन व्यतीत होने की संभावनाओं का भी सृजन हुआ है।

आप व्यक्तिगत रूप से कठिन श्रम की भावना से समर्पित प्राणी हैं। आप अपने उद्य `श्यित कार्य को यथार्थता के साथ स्पष्ट रूप से संपादित करेंगी।

आप धन–धान्य की प्रर्याप्त प्राप्ति हेतु समझ से पूर्व नियत स्थान पर पहुंचने का निर्णय करेंगी। परंतु आप अपनी यह धारणा ग्रहण करें कि अतिरिक्त विकास एवं पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु अपने उद्देश्य का संपादन कर लेंगी। वास्तव में आपके लिए आकस्मिक रूप से मात्र आलस्यपूर्ण प्रवृत्ति का त्याग करना ही उत्तम होगा।

आप पहले से ही धन की महत्ता से परिचित हैं। आप कठिन श्रम एवं दुरुह रास्ते से धनोपार्जन करेंगी तथा धन के व्यय पर सतर्क भी रहेंगी। आप निश्चित रूप से बहुत उत्तम प्रकार के भौतिक सुख प्राप्ति हेतु, धनकोष का संग्रह करेंगी।

आप वित्तीय विषयक किसी भी प्रकार का दुरुपयोग सा सामंजस्य नही करेंगी।

आप अत्यंत धन संचय करने के लिए लोभ की पराकाष्ठा तक पहुंची हुए प्राणी हैं। आप में पूर्ण विश्वसनीयता विद्यमान है। आप किसी का धन अनीतिपूर्ण ढंग से नही प्राप्त करना चाहती बल्कि आप धन प्राप्ति के लिए उपयुक्त सुअवसर पर ऐसा कार्यान्वयन करती हैं। क्योंकि सत्य तो यह है कि आप धन प्राप्ति संबंधी योजनाओं को सांसारिक रीति से बुद्धिमत्तापूर्वक समर्पित भाव से कार्य रूप देती हैं। साथ ही अन्य लोगों को भी धन प्राप्ति के लिए मार्ग दर्शन करती हैं।

आप किसी के साथ छेड़खानी करना या किसी पर आक्रमण करने पर विश्वास नही करती। आप एक आस्तिक प्राणी हैं। आप अपनी स्पष्ट वादिता पूर्वक संतोषजनक सफलता या, निकटता हेतु किसी को भी तरजीह देती हैं। परंतु जब कोई किसी भी समय या अवसर पर कोई शत्रुता पूर्वक आप से ईर्ष्या करता है तो आप उसके प्रगति के पथ पर अवरोधक उत्पन्न करने का

प्रयास करती हैं। आपका प्रदर्शन बाधा पूर्ण एवं विध्वांसात्मक रूप से व्यवधान कारक हो जाता हैं अस्तु आप अपने धैर्य को सीमा के बाहर जाने के लिए सतर्क रहें। अर्थात् अपने धैर्य का संतुलन बनाए रक्खें।

आप स्वाभाविक रूप से यांत्रिक कला में दक्ष एवं परिश्रम तथा समुचित खोजकर अपने लक्ष्य तक पहुंचने वाली प्राणी हैं। आप सामान्यतया प्रशासनिक सेवा कार्य हेतु उपयुक्त हैं। यथा होटल प्रबंधक, अथवा सौंदर्य प्रसाधित व्यवसाय आदि तथा आपकी रूचि साहित्यिक भावनानुसार हो, तों आप उच्च कोटि की लेखक भी हो सकते है यदि आप में लेखन कला एवं क्षमता विद्यमान हो।द्यपि आप मध्यम कद की ऊंची कंधे वालीं, उभरी छाती, उन्नत ललाट एवं चमकीली आखों से युक्त सुंदर व्यक्तित्व की जीव हैं। आप से विपरीत योनि के प्राणी (पुरुष) आकर्षित रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन अति आनंददायक साथ–साथ कठिन एवं कोई न कोई आर्थिक समस्याओं से सदैव युक्त रहेगा। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन सुव्यवस्थित रहेगा। आप अपने नजदीकी और प्रियजनों को यथेष्ठ प्यार और सम्मान देंगी। आप अपने गले के रोग एवं टोनशील रोग के प्रति रक्षात्मक भावना रक्खें तथा कफ जनित तथा शीत प्रकोप से गले में होने वाले कष्ट तथा रोगों एवं पैरों की सूजन तथा दर्द की रक्षा हेतु सतर्क रहें।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

इसके अतिरिक्त आपके लिए अंक 2 तथा 8 अंक लाभदायक है। परंतु अंक 5 आपके लिए त्यागनीय है। इसी प्रकार लाल रंग भी आपके लिए प्रतिकूल है। जबकि, आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली रंग हरा, सफेद एवं गुलाबी रंग है।

नक्षत्रफल

Boy

आप उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए है अतः आपकी जन्म राशि कन्या तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण मनुष्य, नाडी आद्य, वर्ण वैश्य, योनि गो तथा मूषक वर्ग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथमाक्षर "पी" या "पि" से प्रारम्भ होगा। यथा– पीयूष, पीताम्बर।

आपके मन में दया एवं करूणा का भाव स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपमे विद्यमान रहेगी। आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपके चाल चलन से प्रभावित रहेंगे। आप अपने कोमल स्वभाव तथा अच्छे आचरण के द्वारा समाज मे पूर्ण रूप से सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही बुद्धि भी तीव्र होगी। इसी से आप समस्त कार्यो को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने में सफल होंगे। आप राज्य या सेना के किसी प्रभाव पद को भी अपनी योग्यता से प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। आपके सभी कार्य धैर्य पूर्वक होंगे तथा सामाजिक जनों से आपके संबंध मित्रतापूर्ण रहेंगे।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

जीवन में आप विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं संसारिक सुखों का उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा समाज से पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करेंगे। आप कृतज्ञता के सद्गुण से भी सुशोभित रहेंगे तथा दूसरे के द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकार को अवश्य ही मानेंगे। साथ ही आप एक विद्वान के गुणों से भी युक्त रहेंगे।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

समाज मे आप सभी वर्गो के मध्य समान रूप से लोक प्रियता प्राप्त करेंगे तथा अपने सुस्वभाव के द्वारा सबके मन मे अपने लिए स्थान बनाएंगे। आप अर्थकरी विद्या के ज्ञाता होगे तथा उसी के द्वारा धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त सब प्रकार के सुखों से युक्त होकर आप अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

आप अत्यन्त ही सहनशील प्रकृति के व्यक्ति रहेंगे तथा दुःखो एवं सुखों का शांत चित से सम्मान करेंगे। दुःख में अनावश्यक दुःखी होना तथा सुख में अनावश्यक सुखी होना आपकी

प्रवृति नहीं होगी। साथ ही आप साहसी होंगे तथा वीरता के गुणों से भी सुशोभित रहेंगे। आपके जीवन के सभी कार्य साहसपूर्ण ढंग से सफल होंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जो लोगों को अच्छी लगेगी तथा सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। निशाने बाजी की कला मे भी आप अत्यन्त प्रवीण होंगे। आप में एक महानयोद्धा के लक्षण भी दृष्टिगोचर होंगे तथा आपका समाजिक व्यवहार अत्यन्त ही प्रियकर एवं प्रंशसनीय रहेगा।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

इन्द्रियों पर सर्वप्रकार से नियंत्रण करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। आपका चित्त हमेशा शांत रहेगा तथा चंचलता का इसमे सर्वथा अभाव रहेगा एवं अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा आप सर्वत्र मान सम्मान अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

Girl

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण ब्राहमण, गण राक्षस, वर्ग मृग तथा योनि मृग होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "यि" या "यी" से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने से जातक की माता को अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान के द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस मंत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का भी विधि पूर्वक हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि विधान से शान्ति करने पर इसका अरिष्ट प्रभावहीन हो जाता है तथा संबंधित जातक प्रसन्न रहता हैं। जप एवं हवन

मंत्र– ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु।।
जातकाभरणम्

आप जीवन में एक ख्याति प्राप्त महिला रहेंगी तथा दूर दूर तक लोग आपका गुणगान करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी तथा इससे आपका सौन्दर्य भी आकर्षक बनेगा। नाना प्रकार के धनैश्वर्य से युक्त होकर आप एक सामर्थ्यवान महिला होंगी तथा

अधिकांश कार्यों को स्वयं करने की क्षमता रखेंगी। आप का समाज में प्रचुर मात्रा में प्रभुत्व भी कायम रहेगा तथा सभी लोग आपकी लोकप्रियता तथा प्रतिष्ठा को सदैव स्वीकार करेंगे। साथ ही आप भाषण देने की कला में भी निपुण होंगी एवं अपने भाषणों से लोगों को प्रभावित करेंगी। अतः आप नेतृत्व भी प्राप्त कर सकेंगी।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

आप स्वभाव से उग्र रहेंगी तथा क्रोध की प्रबलता आप में विद्यमान रहेगी अतः यदा कदा आपको इसके कारण आर्थिक हानि भी उठानी पडेगी। समाज में आपके अन्जनों से मधुर संबंध रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा धर्म एवं ईश्वर में आपकी विशेष श्रद्धा रहेगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

समाज में आपके बहुत से मित्र होंगे तथा अपने मित्र मंडली में आप श्रेष्ठ एवं लोकप्रिय समझी जाएंगी। आप अत्यन्त ही सन्तोष युक्त स्वभाव की भी रहेंगी तथा अपनी यथाशक्ति अर्जन किए गये धन आदि में ही पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट रहेंगी। आप अपनी आवश्यकताओं को सामर्थ्य के अर्न्तगत ही रखेंगी। लेकिन धर्माचरण में रत रहते हुए भी आपकी उग्रता में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं आएगी।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

आप लेखन कार्य के प्रति अपनी रूचि रखेंगी तथा काव्य सृजन में सफलता अर्जित कर सकेगी। आप एक सहनशील स्वभाव की महिला होंगी एवं सुख दुःख को समान रूप से समझने एवं अनुभूति करने में सक्षम रहेंगी। आप चतुराई पूर्ण तरीके से अपने समस्त कार्यों को सिद्ध करने में भी सफलता प्राप्त करेंगी। निम्न श्रेणी के लोगों में आप अत्यन्त ही श्रद्धेय एवं पूजनीय समझी जाएंगी तथा वे लोग आपके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं भक्तिभावना का प्रदर्शन करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

राशिफल

Boy

कन्या राशि में जन्म लेने के कारण आपके हाथ लम्बे होंगे तथा शरीर के अन्य प्रमुख अंग कान, दान्त तथा नाक भी दर्शनीय रहेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा कई धार्मिक संस्थाओं के संचालक या उच्च पदाधिकारी रहेंगे। आपके मन मे धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास का भाव रहेगा। आप अपने भाषण मे मृदु एवं प्रियवाणी का उपयोग करेंगे तथा अन्य लोगों को प्रभावित करने मे समर्थ रहेंगे। आप सत्य का पालन करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा शुद्धता का भी विशेष ध्यान रखेंगे। आप अपने समस्त जीवन के कार्यों को धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपके मन मे दूसरों की भलाई के लिए कार्य करने की इच्छा रहेगी तथा परोपकार के कार्यों मे अपना पूर्ण सहयोग अर्पण करेंगे। देखने में आपका सौन्दर्य दर्शनीय तथा आकर्षक रहेगा तथा सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी कन्या सन्तति अधिक होगी तथा पुत्र सन्तति अल्प रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारूदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जामयी दृष्टि से युक्त होकर गमन करेंगे तथा भुजाएं एवं स्कंधभाग भी आपके शिथिलता को प्राप्त होंगे। आप अपने जीवन काल में विविध प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर उसका उपभोग करेंगे। आपका शरीर कोमल रहेगा तथा विभिन्न प्रकार की कलाओं के प्रति आप की रूचि बनी रहेगी। साथ ही आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी। नाना प्रकार के शास्त्रों के विषय में भी आपको अच्छा ज्ञान रहेगा तथा स्त्रियों के प्रति आपके मन में तीव्राकर्षण रहेगा। साथ ही आप अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र के मकान एवं धन का उपयोग करने वाले होंगे तथा उससे भी सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बाहर देश विदेश में भी निवास करने वाले होंगे।

व्रीळामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

स्त्रीवर्ग को आप अपनी हास्यमयी क्रियाओं से आर्कषित करने तथा प्रसन्न रखने मे सफलता प्राप्त करेंगे। स्वभाव से आप सुशील तथा सरल रहेंगे तथा सत्कार्यों को सम्पन्न करने मे

भी विशेषतया कार्यशील रहेंगे। साथ ही आप भाग्यवान पुरूष भी होंगे ।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आप की बुद्धि स्वच्छ एवं निर्मल रहेगी तथा किसी को भी धोखा देने की प्रवृति आपके मन मे नहीं रहेगी। लेखन कार्य के प्रति आपकी स्वाभाविक रूचि रहेगी। अतः लेखन मे आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही आपके चित्त में शान्ति रहेगी। लेकिन जीवन मे यदा कदा नेत्र कष्ट से कष्टानुभूति करेगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन मे विशेष आदर का भाव रहेगा तथा उनके हित कार्यो में हमेशा तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासी भी होंगे तथा भौतिक विलासमयी वस्तुओं पर खुले हाथों व्यय करेंगे तथा समस्त सुखसंसाधनों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। सज्जन लोगों के प्रति आपके मन मे सम्मान का भाव रहेगा तथा ये लोग भी आपसे पूर्णतया प्रसन्न रहेंगे। समाज में सभी लोगों के लिए आपके मन में स्नेह तथा प्रेम का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही संगीत एवं अभिनय के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा बडे यत्न से उसमे सफलता प्राप्त करेंगे। अपने जीवन काल में इनसे संबधित सस्थाओ से भी संबधित रहेंगे। आप अपने घर से दूर परदेश में भी निवास कर सकते हैं।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप आजीवन ऐश्वर्य वैभव युक्त जीवन व्यतीत करेंगे तथा सर्वप्रकार के सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आपके मन में विषयवासनाओं संबधी भाव की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा आप इससे व्याकुलता का भी अनुभव करेंगे। समाज मे दूसरे लोगों से आप मधुर संबधों को बनाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही नाना प्रकार की विद्याओं तथा कलाओं के विषय में विस्तृत ज्ञानालोक से आप प्रकाशित रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।

जातकपरिजातः

आपके लिए भाद्रपद मास पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15, तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिर्माण तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय समय में स्वास्थ्य के प्रति भी सतर्कता रखने की आवश्यकता है।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से गणेश चतुर्थी, बुधवार के उपवास रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल, इत्यादि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी समस्त शारीरिक व्याकुलता दूर होंगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होगा एवं शुभ कार्यों में शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र– ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

Girl

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी आखें बहुत ही सुन्दर तथा बड़ी बड़ी होगी एवं वक्षस्थल भी विस्तृत रहेगा। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का भी समावेश रहेगा। आपके हाथ या पैर में मछली आदि का चिन्ह भी अंकित हो सकता हैं। आपके हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की भी रहेंगी। पिता तथा गुरूजनों से आपके अच्छे संबंध ही रहेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहगो। बाल्यावस्था में आप शारीरिक व्याधियों से पीड़ित रहेंगी। अपनी बुद्धिचातुर्य तथा योग्यता के बल पर आप राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त कर सकेगी। आप क्रूर तथा कठोर कार्यों को करने में भी अपनी रूचि प्रदर्शन करेंगी। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्यक्षेत्र चुनने में प्राथमिकता देंगी। कुटिलता के भाव दृष्टिगोचर भी होंगे। इसके अतिरिक्त गुप्त रूप से पापकर्मों को करने की ओर आपकी प्रवृति रहेंगी।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।

बृहज्जातकम्

आपका पेट तथा मस्तक भी विस्तृत आकार का रहेगा। अन्य लोगों की सुन्दर चीजों को देखकर आपमें लोलुपता भाव की प्रवलता दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में कान्ति तथा लावण्यता भी रहेंगी आपके अन्दर धार्मिक भावना भी एवं ईश्वर या धर्म के प्रति भी श्रद्धा रहेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून भी अधिकांश आघात से युक्त रहेंगे। आप किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा चतुराई से उसे सम्पन्न करेंगी। बन्धुजनों से आपको कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। आपका पराक्रम भी समाज में रहेगा तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके स्वभाव में उग्रता भी रहेगी तथा सरकार से आप आर्थिक हानि को भी प्राप्त करेंगी।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।

सारावली

आप अपने जीवन काल में विपुल धन की स्वामिनी बनेंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का भी पालन करेंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली रहेंगी। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान, आदर तथा लाभ प्राप्त होगा। आपकी नियुक्ति राजकीय सेवा में भी हो सकेगी। आपके मन में हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी विद्यमान रहेगी तथा इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दृढसंकल्पी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप नित्य कोई न कोई कार्य अवश्य करती रहेंगी। साहस से भी आप युक्त रहेंगी। तथा निर्मता पूर्वक अपने कार्यकलापो को सम्न्न करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।

जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने को भी उद्यत होंगी परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। स्वभाव में उग्रता के कारण अन्य लोगों से आपका विवाद भी नित्य चलता रहेगा। कभी कभी आप अपने को हृदय से अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगी। आप अपने जीवन काल में शान्ति की अनुभूति अल्प मात्रा में ही करेंगी अन्यथा अशान्त ही रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।

जातकाभरणम्

आप बाल्यकाल से ही घर से बाहर प्रवास करेंगी तथा भ्रमण में भी आप काफी रूचिशील रहेंगी। आप स्वभाव से अभिमानी भी होंगी तथा समय समय पर इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में कठोर भाव रहेगा परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी। अतः साहसपूर्वक धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप समय समय पर निपुणता का भी प्रदर्शन करेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथमप्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार , प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं या अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र आदि अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोम तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए एवं सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थो का दान भी श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र– ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

पाया विचार

Boy

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

Girl

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

गण फलादेश

Boy

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति श्रद्धावान होंगे तथा श्रद्धापूर्वक इनका सत्कार तथा पूजार्चन करेंगे। यदा कदा आप में अभिमानी प्रवृति भी व्याप्त होगी तथा समाज में आप इसका प्रदर्शन करेंगे। दीन दुखियों के प्रति आपके मन में हमेशा करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे तथा बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। आप एक बुद्धिमान पुरूष भी होंगे तथा समस्त कार्यों को बुद्धिमता से पूर्ण करेंगे। शरीर आपका कान्तिमय रहेगा एवं बहुत से लोग आपके द्वारा सुख को प्राप्त करेगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

आप अपने जीवन काल में धन तथा मान सम्मान से युक्त रहेंगे आपको इनका कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आपकी आखें देखने में बड़ी होंगी तथा शरीर भी गौर वर्ण से युक्त रहेगा। आप निशाने बाजी की कला में अत्यन्त चतुर रहेंगे। साथ ही समस्त नगरवासियों पर आप अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगे और उन्हें पूर्णतया वश में रखेंगे।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।
गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।
मानसागरी

Girl

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाली होंगी। आपका हृदय कठोर रहेगा तथा करूणा के भाव का उसमें न्यूनता परिलक्षित होगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप में उग्रता की भी प्रबलता रहेगी तथा शीघ्र ही आप अकारण ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित हो जाया करेंगी। स्वास्थ्य की उत्तमता के कारण आपमें शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा परन्तु अन्य लोगों से आपका विवाद होता रहेगा जिससे अधिकांश लोग आपके प्रति विरोध का भाव रखेंगे।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

जीवन में कभी कभी आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से जीवन में पीड़ित हो सकती हैं। आपकी देहाकृति भी सुदर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में आप कटु शब्दों का यदा कदा प्रयोग

करेंगी जिससे आप से अन्य लोग अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपर्वक आप अपने सम्भाषण में मधुर शब्दो का ही उपयोग करें।

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदाकलहप्रियः।
पुरूषोदुस्सहब्रूते प्रमेही राक्षणे गणे।।
मानसागरी

योनी फलादेश

Boy

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्री वर्ग के प्रति अत्यन्त ही आकर्षित रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे तथा सदैव उत्साह से सम्पन्न रहकर अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही आपकी तार्किक शक्ति अति श्रेष्ठ होगी तथा वाद विवाद में सर्वदा उत्तम रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

Girl

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेगी तथा अपने कार्यों को स्वयं ही करने की इच्छुक रहेंगी। आप हिंसावृति से दूर शान्त स्वभाव से युक्त रहेंगी। आपकी आजीविका भी उत्तम साधनों के द्वारा सुसम्पन्न होगी। सत्य के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा आजीवन इसके पालन के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। अपने बन्धुवर्ग तथा संबंधियों के मध्य आप प्रिय रहेंगी तथा सभी लोग आपको पूर्ण स्नेह प्रदान करेंगे। आप एक धर्म निष्ठ महिला भी होंगी तथा ईश्वर के प्रति अपनी पूर्ण आस्था रखेंगी। साथ ही वीरता का अभाव भी आप में नहीं रहेगा एवं विवादादि में अधिकांश रूप से सफलता ही प्राप्त करेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

ग्रह फल – सूर्य

Boy

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक–प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध–प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

Girl

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी

आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

ग्रह फल – चन्द्र

Boy

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास–प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति–सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

Girl

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता–पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति

भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

ग्रह फल – मंगल

Boy

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम–वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

Girl

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीडित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो

जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

ग्रह फल – बुध

Boy

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

Girl

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

ग्रह फल – गुरु

Boy

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

Girl

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

ग्रह फल – शुक्र

Boy

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक–नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

Girl

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

ग्रह फल – शनि

Boy

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

Girl

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

ग्रह फल – राहु

Boy

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

Girl

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

ग्रह फल – केतु

Boy

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

Girl

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

Boy

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते है फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शो पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दयों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रूचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न मनुष्य धैर्य युक्त एवं सहनशील स्वभाव के होते हैं तथा अपने वार्तालाप में सर्वदा मधुर वाणी का उपयोग करते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता विद्यमान रहती है तथा अपने परिश्रमशील स्वभाव के द्वारा वे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करने में समर्थ होते है जिससे समाज में उनको मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में सुखऐश्वर्य से युक्त होकर वे भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते है। वे शांत स्वभाव के होते है परन्तु पराक्रम एवं उत्साह से पूर्ण रहते है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपकी वाणी मधुर होगी तथा स्ववाक्चातुर्य से आप अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव विद्यमान होगा। आपके सांसारिक महत्व के कार्य यथा समय पूर्ण होंगी जिससे आपको सुखैश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा समाज में आपके मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

आप एक उत्साही पराक्रमी तथा परिश्रमी महिला होंगी तथा इनसे जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलताओं को अर्जित करेंगी। आप अपने श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रखने में समर्थ होंगी। आप में विद्वता का भाव भी रहेगा तथा कला एवं साहित्य के क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक उन्नति करेंगी। साथ ही जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त करके प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

लग्न में मंगल के प्रभाव से आप एक साहसी पराक्रमी तथा तेजस्वी महिला होंगी तथा यदा कदा आप क्रोध के भाव को भी प्रदर्शित करेंगी लेकिन क्रोध के भाव पर आपको यत्नपूर्वक नियंत्रण रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हों। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। लेकिन आपके सांसारिक महत्व के सभी कार्य पराक्रम तथा परिश्रम से सफल होंगे तथा जीवन में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने कार्य कलापों में बुद्धिमता की छाप अवश्य छोड़ेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा परन्तु उदारता का भी आप समय समय पर

प्रदर्शन करेंगी तथा जरूरतमंद लोगों की समय समय पर सेवा एवं सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। लेकिन परिश्रम एवं योग्यता से आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इच्छित धन वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ होंगी। पति से आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगी। संगीत के प्रति भी यदा कदा आप रूचि का प्रदर्शन करेंगी तथा न्यूनाधिक रूप से इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की इच्छुक होंगी।

इस प्रकार आप पराक्रमी तेजस्वी साहसी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा जीवन में स्वयोग्यता से सफलता अर्जित करके सुखपूर्वक समय व्यतीत करने में समर्थ होंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

Boy

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति धन संग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के प्रति हमेशा चिन्तित रहेंगी फलतः धन संग्रह सामान्यतया आपके पास रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी। साथ ही आप जायदाद आदि पर पूंजी निवेश करेंगी जिससे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित होता रहेगा। आपकी पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा आनन्द पूर्वक पारिवारिक जनों के साथ अपना समय व्यतीत करेंगी। इसके साथ ही उनकी खुशी तथा खुशहाली के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा पारिवारिक जन भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद प्रिय होंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा बुध इसका स्वामी है अतः आपकी वाणी मृदु तथा प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी मृदुवाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही अपने विचारों को भी कुशलता पूर्वक अभिव्यक्त करेंगी यदि आप यह समझते है कि यह

विचार अवसर के अनुकूल नहीं है तो आप उसे शीघ्र ही परिवर्तन करने में कोई विलम्ब नहीं करेंगी। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में रहेगी। इसके अतिरिक्त पुरूष वर्ग से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य धातु या रत्नों की भी उपलब्धि होगी। साथ ही धार्मिक या सज्जन लोगों से आप सामान्यतया मित्रता की इच्छुक रहेंगी।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

Boy

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में तृतीभ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से भाई बहिनों के प्रति आप उदार तथा भावुक रहेंगी एवं उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करेंगी। आप उनसे अत्यन्त ही स्नेह भाव रखेंगी तथा उनकी सुख सुविधा के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील रहेंगी परन्तु उनसे आपको यथोचित मान सम्मान अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप अत्यंत ही साहस एवं पराक्रम का प्रदर्शन भी करेंगी। आप एक बुद्धिजीवी महिला होंगी तथा नैतिकता के प्रति पूर्ण सजग रहेंगी। साथ ही समयानुसार अपने विचारों में भी परिवर्तन करती रहेगी। आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को पूर्ण रूप से याद रखेंगी। इसके अतिरिक्त आप में क्रोध के भाव की भी क्षणिकता रहेगी तथा शीघ्र ही शान्त भी हो जाएंगी।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को

पूर्ण करेंगी। साथ ही नवीन ज्ञान या अन्य विषयों को शीघ्र ही सीखने में समर्थ रहेंगी। दर्शन शास्त्र या उच्च शिक्षा के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। सामाजिक जनों के प्रति आपका सेवा भाव रहेगा अतः इससे आपको ख्याति तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आप किसी भी उददेश्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में भी समर्थ रहेंगी। अतः यदा कदा आपको समूह का नेतृत्व भी मिल सकता है। साथ ही समाज सेवा या नवीन खोज आदि से भी आप ख्याति अर्जित कर सकती हैं। आधुनिक संचार साधनों की सुख सुविधाएं भी आपको प्राप्त होगी अतः टेलीफोन, दूरर्शन तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगी। साथ ही प्रकाशन संपादक या संवाददाता के रूप में भी आप सफल हो सकती हैं। इस प्रकार परिश्रम पूर्वक आप अपने घर एवं परिवार का पालन करेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

Boy

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा केतु भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको वांछित सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आवश्यक सुख–संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होंगे। लेकिन इन सबको प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथापि समाज में भी आप अपना यथोचित स्तर बनाए रखेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। नाना या नानी से भी आप न्यूनाधिक मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप आवश्यक मात्रा में धन–सम्पत्ति को अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको जीवन में कभी भी विवादित सम्पत्ति से संबंध नहीं रखना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

जीवन में आपको अच्छे आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर सुन्दर, आकर्षक एवं आधुनिक सुख–सुविधाओं से युक्त होंगा एवं भौतिक उपकरणों की इसमें प्रचुरता रहेगी। इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथ पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु संबंधों में मधुरता अल्प मात्रा में ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख उत्तम रहेगा तथा अपने वाहन का आप प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा भौतिकतावादी विचारों की उनमें प्रधानता रहेगी। परिवार के उपर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे परंतु यदा कदा उनकी तेजस्वी वृति से किसी सदस्य को अल्प कालिक परेशानी हो सकती है। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा समयानुसार आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव का भाव उत्पन्न हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति की अवहेलना करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आप रूचिशील एवं परिश्रमशील रहेंगे तथा छोटी कक्षाओं से ही आपको वांछित सफलता मिलेगी। स्नातक परीक्षा भी परिश्रम एवं बुद्धिमता से उतीर्ण करने में समर्थ होंगे। यदि आप किसी तकनीकी शिक्षा का पाठ्यक्रम करें तो इसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी तथा आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी जिससे उज्ज्वल भविष्य के मार्ग को प्रशस्त करेंगे। क्योंकि आप एक परिश्रमी व्यक्ति है अतः तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सफलता

अर्जित कर सकते है।

चतुर्थ भाव में मंगल की राशि में केतु के प्रभाव से मध्यावस्था में आप रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानियों का सामना कर सकते है। यदि आप प्रारंभ से ही खान–पान का ध्यान रखें एवं रक्तचाप तथा हृदय को प्रभवित करने वाले पदार्थो का सेवन अल्प मात्रा में किया जाये तो ऐसी समस्याओं में कमी आ सकती है।

Girl

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगी। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख–संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगी। आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगी तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली महिला समझी जाएंगी। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रहेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी सदस्य को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगी। इसके अतिरिक्त सुख–दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने

के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगी तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगी। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगी। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

Boy

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तथा बृहस्पति भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी फलतः समयानुसार इस गुण से लाभ एवं सफलता अर्जित करेने में समर्थ होंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी शीघ्र एवं सुगमता पूर्वक करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र में आपकी रूचि होगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आधुनिक, वैज्ञानिक विषयों, साहित्य, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र में भी आपकी रूचि एवं आकर्षण होगा तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों में ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

पंचमभाव में बृहस्पति की स्थिति के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम मर्यादा नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण पर आधारित होगा तथा परस्पर भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम–प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में हो सकती है जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में बृहस्पति की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी परन्तु पुत्र संतति में विलम्ब होगा लेकिन प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता–पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना कर्तव्य समझेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता–पिता की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव, विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता के माध्यम से ही सम्पन्न करेंगे लेकिन आदर का भाव दोनों के प्रति बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता–पिता की तन–मन–धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपके बच्चे सक्रिय गुणवान एवं उत्तम कार्य कलापों को सम्पन्न करने वाले होंगे जिससे अन्य लोग भी उनसे प्रभावित होंगे तथा वांछित स्नेह तथा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। इस प्रकार

आपका संतति सुख अच्छा रहेगा।

Girl

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है। शनि भी नवमेश एवं दशमेश होकर मित्र राशि में पंचमभाव में स्थित है। शनि की यह स्थिति विद्या बुद्धि सन्तान एवं सम्मान के लिए अत्यधिक शुभ मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा समस्त कार्य कलापों पर आपकी बुद्धिमता की स्पष्ट छाप रहेगी जिससे लोग आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों के प्रति आपकी रूचि होगी तथा अवसरानुकूल इन पर परिश्रम पूर्वक अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगी। जिससे आप एक विदुषी के रूप में समाज के समक्ष स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगी। ज्यौतिष एवं गणित के क्षेत्र में भी आप सफलता अर्जित करके समाज में सम्मान प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त लेखन कार्य आपके लिए लाभदायक सिद्ध होग।

प्रेम प्रसंगों में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं होगी तथा प्रेम प्रसंग आपके लिए आदर्श या मर्यादा का सूचक होगा। अतः आपके अधिक प्रेम प्रसंग नहीं होंगे तथा कोई हुआ भी तो वह आपके विवाह में परिवर्तित हो सकता है। आपका यह विवाह जीवन में सुख ऐश्वर्य एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा।

नवमेश की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको विवाह के बाद यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी। आपकी सन्तति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपके सभी बच्चे सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, गुणवान एवं पराक्रमी होंगे तथा अपने व्यवहार से अन्य सामाजिक जनो को भी प्रभावित एवं प्रसन्न रखने में सफल होंगे। जिससे सभी लोग उन्हें वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में सम्मान के भाव में वृद्धि होगी। अतः बच्चों पर आप गौरव की अनुभूति करेंगे। वे सभी माता पिता के आज्ञाकारी होंगे तथा अनुभूति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे। सामाजिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। इससे आपको मानसिक शान्ति एवं संतुष्टि की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बच्चों की माता की अपेक्षा पिता से अधिक लगाव होगा तथा अपनी समस्याएं पिता से ही कहेंगे तथा आप भी मित्रवत् उनकी समस्याओं का समाधान करेंगे जिससे परस्पर सामंजस्य बना रहेगा।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आपके बच्चों की पूर्ण रूचि होगी तथा अपनी योग्यता, बुद्धिमता एवं परिश्रम से वे शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत सफलता अर्जित करके अपने उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे किसी उच्च एवं प्रशासनिक पद पर भी नियुक्त हो सकते है। इससे आपके मान सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बच्चे आपकी पूर्ण देखभाल एवं सेवा करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी जिससे आप बच्चों से प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

Boy

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते है तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी क्रोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

Girl

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगी तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। लेकिन यदा कदा बुखार या अन्य रोगों से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की कमी रहेगी जिससे एक बार बीमार पड़ने पर काफी समय बाद ही आप स्वस्थ हो पाएंगी। इसके अतिरिक्त भावुकता भरे क्षणों में आपको कोई महत्वपूर्ण या

संवेदनशील कार्य नहीं करना चाहिए।

आपका शत्रु या विरोध पक्ष पर्याप्त होगा तथा आपके सम्मान में कमी करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेगा। क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी यदा कदा आपके विरोध करने में तत्परता का प्रदर्शन करेंगे। अतः प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शत्रुओं के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपको कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकती हैं यद्यपि इसमें आपका काफी धन व्यय होगा परन्तु किंचित परिश्रम के उपरांत आपको सफलता भी मिल सकती है ।

सेवक वर्ग आपके लिए विशेष विश्वास पात्र तथा ईमानदार नहीं रहेंगे तथा इनसे समय समय पर आपको आर्थिक या अन्य प्रकार से हानि का सामना करना पड़ेगा। साथ ही पारिवारिक रहस्यों का भेद खोलकर भी वे आपकी मान हानि कर सकते हैं। आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति की महिला होंगी तथा इसी के अनुसार अपने अधिकाँश कार्यो को सम्पन्न करेंगी। यद्यपि आपके पास धनऐश्वर्य पूर्ण होगा परन्तु आपातकाल के लिए संग्रह करने में असमर्थ रहेंगी फलतः ऋण आदि लेने की आवश्यकता पड़ेगी। इसके साथ ही मामा मामी आदि से आपको कोई विशेष सुख एवं सहयोग की प्राप्ति नहीं होगी। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में वात या गुर्दे से संबन्धित परेशानी हो सकती है। यद्यपि आप एक धन मान सम्मान से युक्त महिला होंगी परन्तु कई बार आपके अच्छे कार्यो से भी समाज में शत्रुता का भाव बन सकता है। अतः सचेत रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

Boy

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है परन्तु शनि के प्रभाव से उसमें उग्रता पराक्रम एवं साहस का भाव रहता है लेकिन कर्तव्य परायणता के भाव में न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी परन्तु यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। उनके अधिकांश कार्य कलाप पराक्रम से सम्पन्न होंगे तथा अपने साहसिक कार्यो से वे अन्य जनों को प्रभावित करेंगी उनकी प्रवृति स्वाभिमानी होगी। सप्तम भावस्थ शनि के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की भी उनमें न्यूनता रहेगी एवं स्वार्थी प्रवृति भी होगी फलतः परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन नहीं करेंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्याम वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग एवं प्रत्यंग पुष्ट रहेंगे जिससे सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका लगाव होगा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनका रूझान रहेगा एवं कला के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध उत्पन्न होंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा शनि के प्रभाव से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा आकर्षण रहेगा। लेकिन शनि के प्रभाव से पत्नी की तेजस्विता तथा सहिष्णुता का भाव यदा कदा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। अतः ऐसे समय में आपको संयम एवं धैर्य पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सुदृढ होगी। प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा दोनों ओर से औपचारिकताएं रहेंगी तथापि एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा समयानुसार एक दूसरे को नैतिक या अन्य रूप से सहयोग के लिए तत्पर होंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से असन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का सम्मान तथा सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः जीवन में साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

Girl

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा चन्द्रमा भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया वृश्चिक राशि के सप्तम भाव के प्रभाव से जातक का सहयोगी पित प्रकृति अधिक व्यय करने वाला धनवान एवं धर्म के प्रति अल्प श्रद्धा रखने वाला होता है। चन्द्रमा की नीच स्थिति के प्रभाव से वह उग्रस्वभाव तथा मानसिक रूप से अशांत भी हो सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति तेजस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा स्वभाव में कुछ चिड़चिड़ापन भी विद्यमान होगा। लेकिन वह एक शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा साहित्य संगीत एवं कला के प्रति उनकी रूचि रहेगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा जिससे परिवार एवं समाज के प्रति सामान्यतया अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे परन्तु यदा कदा स्वार्थ की भावना उत्पन्न होने पर इनके पालन में न्यूनता भी आ सकती है।

आपका पति सामान्य गौरवर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनकी शारीरिक संरचना आकर्षक होगी एवं शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होगा साथ ही शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए वह व्यायाम आदि भी नियमित रूप से करेंगे।

आपका विवाह किसी संबंधी के माध्यम से सम्पन्न होगा परन्तु नीचस्थ चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आप बिना किसी की सलाह लिए हुए अपनी इच्छा से भी विवाह कर सकती है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा परन्तु पति की मानसिकता से कभी कभी आपको परेशानी की अनुभूति होगी अतः ऐसे समय पर धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तथा उनके मनोभावों का आदर करते हुए संयम पूर्वक व्यवहार करें तभी आपसी संबंधों में मधुरता रह सकती है।

आपका विवाह साधारण धनी एवं प्रतिष्ठित परिवार से होगा एवं विवाह में आपको दहेज या धन सम्पति देनी पड़ सकती है लेकिन सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं जीवन में उनसे नैतिक सहयोग प्राप्त होता रहेगा फलतः आपस में मान सम्मान एवं स्नेह की भावना बनी रहेगी।

आपके पति का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा भाव कम ही होगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगे। साथ ही वाणी में भी मधुरता के भाव की न्यूनता रहेगी जिससे वे उनसे अप्रसन्न रहेंगे। साले एवं सालियों से भी उनके मधुर संबंध नहीं रहेंगे तथा अपने तेजस्वभाव से उन्हें प्रभावित करने में असमर्थ रहेंगे जिससे उन्हें वे वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए यही श्रेयकर एवं लाभदायक रहेगा।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

Boy

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबन्धी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझें जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा आपका इस पर पूर्ण विश्वास रहेगा। आपको इन विषयों का न्यूनाधिक ज्ञान भी हो सकता है। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी आप कुछ न कुछ कार्य अवश्य सम्पन्न करेंगी। पैतृक सम्पत्ति आपको मिलेगी लेकिन वह अल्प मात्रा में ही होगी तथा उसका उपभोग भी अच्छी तरह से करने में असमर्थ रहेंगी। आपके बन्धु या संबन्धी भी उस जायदाद पर अपना अधिकार प्रस्तुत कर सकते है जिससे परस्पर अनावश्यक विवादों से आपसी संबंधों में कटुता का वातावरण बनेगा। अतः पारिवारिक कलह की भी संभावना रहेगी। अतः इससे आपको प्रसन्नता की अपेक्षा अप्रसन्नता ही अधिक प्राप्त होगी।

आपका दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा तथापि यदा कदा आर्थिक कमी से परेशानियां हो सकती है लेकिन आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से उसे दूर करने में समर्थ रहेंगी। बीमा आदि कराने

से आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा इससे आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः बीमा अवश्य करवाएं वह अपना या किसी भी वस्तु का हो सकता है। यद्यपि आपकी कुडंली में कोई दुर्घटना या चोरी आदि का कोई योग नहीं है तथापि इस बारे में आपको सतर्क रहना चाहिए लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

Boy

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृतियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरूओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे।आपकी व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पंसद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Girl

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म या धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगी परन्तु इसमें स्वयं भी कोई विशेष रूचि नहीं लेंगी तथा स्वेच्छा से किसी धार्मिक ग्रंथ का अध्ययन नहीं करेंगी लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि भी सम्पन्न कर सकती है साथ ही दैनिक पूजा पाठ में न्यूनाधिक समय प्रदान करेंगी या इस उददेश्य की पूर्ति के लिए किसी पूजा स्थल पर जाएंगी। आप धार्मिक कार्य कलापों पर विशेष व्यय करना उचित नहीं समझती। लेकिन अन्य विषयों में उच्च शिक्षा अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। धर्म एवं भाग्य को अपनी विचार धारा में कम ही सम्मिलित करेंगी अर्थात कार्य पर अधिक विश्वास करेंगी। आपकी अर्न्तप्रज्ञा भी विकसित रहेगी तथा मन में आत्मा को स्वीकार करेंगी।

आपके विचार में जीवन कार्य प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमे सहायक होना

चाहिए। अतः अन्य जनों को हमेशा कर्म करने की शिक्षा प्रदान करेंगी तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने को कहेंगी। परन्तु प्रौढ़ावस्था में स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य को विशेष महत्व प्रदान करेंगी। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में ही होगी तथा इनसे आपको जीवन में विशेष लाभ भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा लेकिन समाज में आप एक सम्मानित तथा ख्याति प्राप्त महिला के रूप में सम्मान्नीया रहेगी। आप अपने पूर्व जन्मों के कर्मो के फल को युवावस्था के बाद प्राप्त करेंगी तथा इस समय सुखी रहेंगी लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि से भी इच्छित सुख एवं सहयोग मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथापि आप सामान्यतया सन्तुष्टि की ही अनुभूति करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

Boy

आपके जन्म समय में दशम भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा परन्तु श्रमसाध्य क्रिया भी इसमें विद्यमान होगी। साथ ही आप समय समय पर इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे इससे आपको लाभ होगा परन्तु अनावश्यक परिवर्तनों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में तुला राशिस्थ मंगल के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र, डाक्टर, इंजीनियर, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर, पुलिस, सी आई डी, होटल प्रबंधन या कर्मचारी, अग्निशमन विभाग, पराक्रमी क्षेत्र, विद्युत ऊर्जा विभाग, विद्युत फैक्टरी आदि उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः अपने उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार, धातु कार्य, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरणों का क्रय विक्रय, विद्युत एवं इंजीनियरिंग उपकरण, कैमिस्ट, रासायनिक पदार्थ, होटल का स्वामित्व एवं जमीन जायदाद का क्रय विक्रय आदि से वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करने में समर्थ होंगे। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हों तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने कार्य का प्रारंभ करें।

दशमभावस्थ मंगल के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं स्नेह का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे समुचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी अपनी योग्यता एवं परिश्रम से पिता के सम्मान में वृद्धि के साथ साथ अपने क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता की अल्पता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए एवं सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।

Girl

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील

रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में नौकरी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगी। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकती है। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार, प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यो से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगी तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगी। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगी। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली मानी जाएंगी। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगी इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा। आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगी। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

Boy

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते है। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे ।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यो को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा अपनी महत्वाकांक्षा तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करते हुए कार्यो में सर्वदा तत्पर रहेंगी तथा इनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। आप जब कभी भी जिस वस्तु की कामना करेंगी आपको यथेष्ट रूप से उसकी प्राप्ति हो जाएगी। आप शिक्षिका, बैंक, कानून या कम्पनी आदि द्वारा इच्छित लाभ एवं धनार्जन करेंगी यदि आप स्वयं कार्यरत नहीं है तो आपके पति को उपरोक्त विभागों या सम्बन्धित लोगों से धनार्जन होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। मित्रों के संबंध में आप भाग्यशाली रहेगी तथा उनसे आपको समय समय पर उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा एवं संकट के क्षणों में मित्रवर्ग आपको पूर्ण प्रोत्साहन प्रदान करेंगे जिससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी। वे आपसे वयस्क भी होंगे।

आपका सामिजक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी नेता तथा अन्य समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपके संबंध रहेंगे जिससे समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा सम्मानीय महिला समझी जाएंगी । इसके साथ ही आपको अपने सामाजिक क्षेत्र में पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। आपको बड़े भाईयों का जीवन में पूर्ण सहयोग तथा स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपको यथा शक्ति अपना योगदान प्रदान करेंगे। फलतः आप पितृवत उनका आदर करेंगी। आपको युवावस्था के बाद किसी विशिष्ट सामाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। इस प्रकार आप जीवन में सुखऐश्वर्य एवं संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

Boy

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते है अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी व्यय कर सकते है आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यो से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।

Girl

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करेंगी तथा अवसरनुकूल बचत करने में भी समर्थ रहेंगी। आप सामान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही सम्पन्न करेंगी तथा हमेशा उचित जगह व्यय या निवेश करने की उत्सुक रहेंगी लेकिन आपको सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों पर पूंजी निवेश नहीं करना चाहिए तथा ख्याति प्राप्त जगह ही पूंजीनिवेश करें तभी लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी भी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर एवं धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया युवावस्था के बाद ही सुदृढ़ तथा संतोष प्रद होगी। अतः आपके आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा कम ही रहेगी। इसके साथ ही दीर्धावाधि के निवेशों से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा लेकिन मंगल के प्रभाव से कोई

अनावश्यक व्यय भी कर सकती है जिसकी विशेष आवश्यकता न हो। अतः ऐसे समय में आपको सावधान रहना चाहिए। यात्राओं से आपको आनंदानुभूति होगी तथा समय समय पर लाभ भी प्राप्त होगा। जीवन में आपकी विदेश यात्रा अवश्य होगी। यह यात्रा धर्म या धार्मिक कार्य से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य मित्र या संबंधी के सहयोग से यह यात्रा सम्पन्न होगी। इस यात्रा से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा तथा आपकी ख्याति एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। इसके साथ ही यदा कदा बाएं आंख से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

दशा विश्लेषण

Boy

महादशा :– गुरु
(22/06/2012 - 22/06/2028)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा 22/06/2012 को आरम्भ तथा 22/06/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है। गुरु आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। पाँचवां भाव संतान, आनन्द, आमोद–प्रमोद, रोमांस, वर्ग–पहेली जैसी प्रतियोगी स्पर्धाओं, लॉटरी, प्रेम–संबंध, अच्छी या बुरी मानसिकता, धार्मिक बौद्धिकता, उच्च शिक्षा तथा सत्ता, विशाल संपत्ति आदि का भाव है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है। पांचवे भाव में स्थित यह आपकी कुण्डली के 9वें, 11वें तथा पहले भाव को प्रभावित करता है। 16 साल की यह अवधि आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धिदायक तथा कल्याणकारी होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु पाँचवें भाव में स्थित है। यह एक त्रिकोण है। गुरु का प्रभाव प्रथम भाव (9वें तथा 11वें के अतिरिक्त) पर है जो व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत मामलों के भाव के साथ–साथ एक त्रिकोण और केन्द्र भी है। फलतः आपकी शत्रुओं से रक्षा होगी। किसी बड़ी दुर्घटना की सम्भावना नहीं है। आप अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

गुरु पाँचवें भाव में स्थित है जो प्रतिस्पर्धा तथा विशाल सम्पत्ति का भाव है। अतः आपको अपनी संपत्ति तथा वित्त को बढ़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप अत्यन्त ही बुद्धिमान रहेंगे और तर्कशास्त्र तथा कानून में अभिरुचि रहेगी। नौकरी में आपकी पदोन्नति होगी तथा धनोपार्जन का अवसर मिलेगा।

व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में नई–नई योजनाएँ आएंगी जिनके क्रियान्वित होने पर आपको स्रोत तथा वित्त बढ़ाने का अवसर मिलेगा और समाज का सहयोग प्राप्त होगा। गुरु के 11वें भाव पर, (9वें तथा पहले भाव के अतिरिक्त) जो आय का भाव है, प्रभाव के फलस्वरूप आपकी आय में वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु का संबंध दोनों त्रिकोणों के साथ, पाँचवें में स्थित होने तथा 9वें एवं पहले (जो एक त्रिकोण और केंद्र भी है) पर दृष्टि होने से आपका पारिवारिक जीवन काफी उत्साहपूर्ण तथा खुशहाल होगा। आपके जीवनसाथी सहयोगी तथा सहायक होंगे। आपके बच्चे अत्यन्त

आज्ञाकारी होंगे। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

दोनों त्रिकोणों से सम्बद्ध तथा पंचम भाव में स्थित गुरु की दृष्टि 9वें और पहले भाव (त्रिकोण तथा केन्द्र) पर होने के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे।

Girl

महादशा :– चन्द्र
(30/03/2021 - 30/03/2031)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 30/03/2021 को आरंभ और 30/03/2031 को समाप्त होगी।

चन्द्र सप्तम भाव में अवस्थित है। सप्तम भाव कानूरी समझोते, साझेदार अर्थात् जीवन साथी, व्यापार, मुकद्दमें, विदेश में प्रभाव तथा वहां प्राप्त ख्याति और जीवन में खतरे का सूचक है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा। आपका दाम्पत्य जीवन अनुकूल और आनन्ददायक होगा।

स्वास्थ्य :

चंद्र की स्थिति से सप्तम भाव प्रबल हो रहा है। चन्द्र की प्रथम भाव या लग्न पर दृष्टि है, अतः आपका जीवन सुखमय तथा उत्तम होगा और किसी बड़े रोग या चोट की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में अवस्थित चन्द्र भाव को प्रबलित करता है जो साझेदार का भाव है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपकी संपत्ति और आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। आपका बैंक बैलेंस बढ़ेगा और आपको जीवन के सुखों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

साझेदारी के व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यापार का विकास होगा और यदि नौकरीपेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अवसर आएंगे और अपने व्यवसाय का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि व्यवसाय में हैं तो आपके मस्तिष्क में अनेक सुन्दर और अनुकूल व्यवसाय के विचार उभरेंगे जिन्हें चालू किये जाने पर आपको नाम मिलेगा। आप सामाजिक होंगे ओर व्यवसाय के क्रम में यात्राओं पर जा सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन अनुकूल और उत्तम होगा। आपके व्यक्तित्व और जीवन

साथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा जिससे आपको वैवाहिक जीवन का सुख मिलेगा।

शिक्षा / प्रशिक्षण :

मस्तिष्क का कारक चन्द्र आपको धार्मिक ग्रन्थों व पुराणों के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा। आपको उन ग्रन्थों के अध्ययन से आनन्द की प्राप्ति होगी।

दशा विश्लेषण

Boy

महादशा :– शनि
(22/06/2028 - 23/06/2047)

शनि की महादशा की अवधि उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्उली में यह 22/06/2028 को आरम्भ और 23/06/2047 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। यह स्वाभाविक रूप से एक अशुभ ग्रह है। यह फल की प्राप्ति में बाधा तथा विलम्ब कर जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता, पर लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। जन्म कुण्उली में सप्तम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भावों पर है जिससे उनके कार्य प्रभावित हो रहे हैं। सप्तम भाव कानूनी गठबंधन, दासता, जीवन ओर व्यापार के साझेदार, वाद–मुकदमा, विदेश में अर्जित प्रभाव व सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

सप्तम भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि की प्रथम भाव (9वें और 4थे भावों के साथ–साथ) पर दृष्टि है इसलिए आपको किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है, किन्तु आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के बावजूद आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में स्थित शनि के कारण आपको कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है और लक्ष्य की प्राप्ति में और अर्थ सम्पत्ति में वृद्धि के मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पर सकता है। इसके अष्टम भाव स्वामी होने के कारण भी आपकी आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव आएंगे। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील रहेगी।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सुव्यवस्थित हो सकते हैं। आपके विदेश जाने और वहाँ बस जाने की सम्भावना भी है। आप दफ्तर के कार्य से भी विदेश जा सकते हैं जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी। किन्तु, विदेश में आपके बीमार होने अथवा कुछ स्वास्थ्य समस्या से ग्रसित होने की सम्भावना है जिससे अन्ततः आपको देश वापस आना होगा।

पारिवारिक जीवन :

शनि के सप्तम भाव में स्थित होने के कारण आपका विवाह अच्छे कुल के धार्मिक तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ होगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के कारण विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकृष्ट होंगे। आपके जीवन साथी के कारण आपके पारिवारिक जीवन में तनाव

उत्पन्न हो सकता है।

Girl

महादशा :– मंगल
(30/03/2031 - 30/03/2038)

मंगल की महादशा 30/03/2031 को आरम्भ तथा 30/03/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल प्रथम भाव में अवथित है। अतः यह दशा आपके लिये भाग्यशाली और उत्तम होगी। इसके पूर्व आपकी 10 वर्षों की चन्द्रदशा चल रही थी। आप को माता से लाभ और सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति होगी। इस दशा में आपको शुभ फल मिलते रहेंगे। आपको यश, प्रतिष्ठा, उत्तम स्वास्थ्य तथा कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको ऊर्जा तथा जीवन शक्ति की प्राप्ति होगी। आप अपने सारे कार्यों का पूरे उत्साह से सम्पादन करेंगे। इस दशा के दौरान आप आत्मविश्वासी और हठधर्मी होंगे और अपनी प्रशासनिक क्षमता का प्रदर्शन करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सम्मान करना पड़ सकता है। आप सरदर्द, हृदय–रोग या पित्त–दोष से पीड़ित हो सकते है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप प्रशासनिक सेवा में हैं तो इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। आप सुर्खियों में रहेंगे और आपको यश और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी। आपको अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण या परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। मुकदमें में विजय होगी। आप सैन्य सेवा, अभियन्त्रण, शल्य चिकित्सा या लौह–इस्पात उद्योग से सम्बद्ध व्यवसाय का चयन अपनी जीविका के लिये कर सकते हैं। आप योजना–कार्य या प्रशासनिक कार्यों का सम्पादन अति सुन्दर ढंग से कर सकते हैं। आप रसायन, सामुद्री उत्पाद, कुटीर–उद्योग आदि से संबंद्ध व्यापार कर सकते हैं। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या शल्प चिकित्सक हो सकते हैं। आप तकनीकी अथवा कृषि से सम्बद्ध कार्यों में सफल होंगे।

सम्पत्ति, वाहन, यात्राएं :

आप न केवल स्वयं धन अर्जित करेंगे बल्कि आपको विरासत की भू–सम्पत्ति भी मिलेगी। अचानक अप्रत्याशित स्रोतों से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। पैतृक सम्पत्ति, दाय, सेवा–निवृत्ति से लाभ, बोनस, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति हो सकती हैं जो लाभदायक होंगी। साझेदारों या पैतृक सम्पत्ति से लाभ भी हो सकते हैं। इस दशा में आप अपने मकान का निर्माण कर सकते हैं या आपको किसी मकान की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

इस अवधि में आप की शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रगति करेंगे। आपको छात्रवृत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं, वाद–विवादों और अन्य प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। दृढ़ और आत्मविश्वासी होंगे तथा नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। खेलों, विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। आप एक गम्भीर छात्र होंगे–हमेशा सक्रिय, सावधान और प्रतियोगी। आप नेतृत्व करेंगे किन्तु किसी का अनुसरण नहीं करेंगे।

परिवार :

आपको परिवार से सुख मिलेगा। जीवन साथी के साथ सम्बन्धों में कभी–कभी तनाव हो सकता है। आपको हठधर्मिता का परित्याग करना चाहिए और परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए। आपके बच्चों के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनके साथ आपके संबंध मुधर होंगे। उनके भाग्य की उन्नति होगी और वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेंगे। आपकी माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनका स्वास्थ्य थोड़ा प्रभावित होगा। आपके पिता को धन, समृद्धि, लाभ, यश, ख्याति आदि की प्राप्ति होगी। आपको उनके साथ मधुर संबंध रखना चाहिए। आप को उनसे लाभ मिल सकता है। आपके छोटे भाई–बहन भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी तथा आपके बड़े भाई–बहनों को प्रगति करने के लिए एक कठिन परिश्रम करना होगा और वे अपने कार्यों में सफल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अच्छे होंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की अन्तर्दशा आरम्भ से ही लाभदायक होगी। आपके घर में शुभ कार्य होंगे, आपको बच्चों से खुशी मिलेगी तथा आपकी शक्ति व पराक्रम में वृद्धि होगी। राहु की अन्तर्दशा अशुभ हो सकती है और स्वास्थ्य–समस्याओं तथा आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की अन्तर दशा में आपको बच्चों तथा बड़ों से सुख तथा तीर्थाटन के अवसर की प्राप्ति होगी और आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी। दशम तथा एकादश भाव के स्वामी की अन्तर्दशा आपको व्यावसायिक सफलता तथा लाभ प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी शक्ति में कमी आएगी, असफल छोटी यात्राएँ होंगी और भाई–बहनों से कष्ट मिलेगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण मानसिक समस्याओं और तनाव से सामना होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको मानसिक तनाव होगा तथा पारिवारिक जीवन में संकट का सामना करना पड़ेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपके लिये समृद्धिशाली सिद्ध होगी और इस दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आप भाग्यशाली होंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण आपको माता से लाभ होगा और भूमि और वाहन की प्राप्ति होगी।

दशा विश्लेषण

Boy

महादशा :– बुध
(23/06/2047 - 22/06/2064)

बुध की महादशा 23/06/2047 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 22/06/2064 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक–थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय–व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता हैं। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन–सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन–सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन–जायदाद के सभी लेन–देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

शिक्षा :

इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्म पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई–बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन–वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

Girl

महादशा :– राहु
(30/03/2038 - 30/03/2056)

राहु की महादशा 30/03/2038 को आरम्भ और 30/03/2056 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु तृतीय भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको लाभ, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों व शत्रुओं का विरोध मिला होगा। राहु की वर्तमान दशा में आपको शत्रुओं पर विजय, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको शक्ति तथा स्फूर्ति मिलेगी। किन्तु, मौसम में परिवर्तन के कारण चर्मरोग, दाहक रोग, स्नायविक दुर्बलता और शारीरिक थकावट हो सकती है। इन मामूली रोगों को दोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति उत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको सम्पत्ति तथा लाभदायक कार्य की प्राप्ति होगी। सट्टे, निवेश में लाभ मिलेगा। नौकरी में भी सुन्दर लाभ मिलेगा। पिता से अथवा परिवार से लाभ मिल सकता है। उच्चाधिकारियों से लाभ की सम्भावना है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सेवा, राजनीति, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक, यातायात, कूटनीतिक कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, पत्थर, रत्न, बिजली के उपकरण, दवा, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी तथा जीवन–वृत्ति में प्रगति होगी। व्यवसाइयों–व्यापारियों को कुछ उतार–चढ़ाव का सामना करना होगा किन्तु वे अपने रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं का नाश करेंगे। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और दशा की प्रगति के साथ–साथ व्यापार का विस्तार होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। आपके निवास में परिवर्तन हो सकता है अथवा आपको एक मकान की प्राप्ति हो सकती है। आप गाड़ी की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। जमीन–जायदाद के मामलों में नुकसान से बचने के लिए आपको सावधान रहना होगा। इस दशा के दौरान आपकी अनेक छोटी यात्राएं होंगी। शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्राओं की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप तेज ओर दृढ़प्रतिज्ञ हैं और सभी परीक्षाओं में सफल होंगे। विज्ञान, दवा, रसायन शास्त्र, इन्जीनियरिंग, सरकारी सेवा तथा यातायात के क्षेत्र में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के लिए यह समय लाभदायक और समृद्धि दायक होगा। आपके जीवनसाथी की दूर की यात्रा और समृद्धि तथा सुन्दर भाग्य की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता की यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर उनका झुकाव हो सकता है। आपके पिता को साझेदारों, वाणिज्य–व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। आपके छोटे भाई–बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और उनका निवेश सफल होगा। उनके साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कुछ प्रयास करना होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, सम्बन्धियों

से सहायता मिलेगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गुरु की अन्तर्दशा में जीवन में सफलता मिलेगी। साझेदारों से लाभ होगा और विवाह तथा यात्रा होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन, सौभाग्य की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध के कारण यश, ख्याति, सम्पत्ति तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान से सुख, यात्रा तथा सौभाग्य की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, शक्ति और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लाभ तथा जीवन का सुख मिल सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या और लाभ प्राप्त हो सकता है।

Boy Girl

Boy
एस्ट्रोग्राफ — 2025

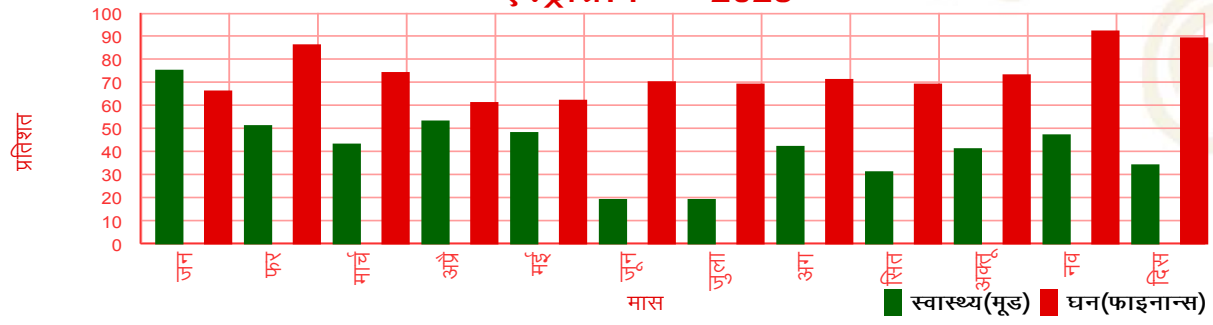

Girl
एस्ट्रोग्राफ — 2025

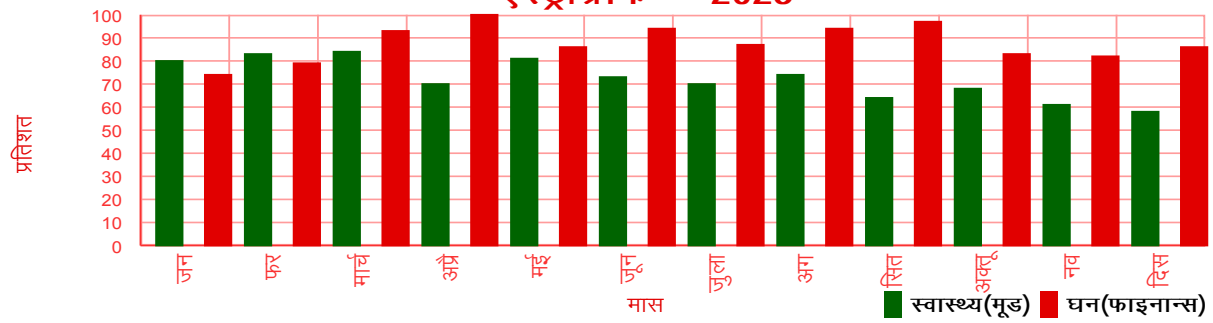

Boy
एस्ट्रोग्राफ — 2026

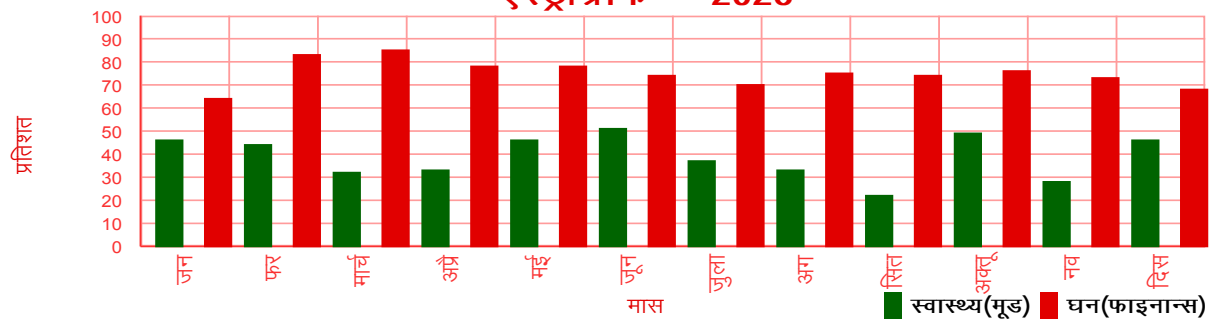

Girl
एस्ट्रोग्राफ — 2026

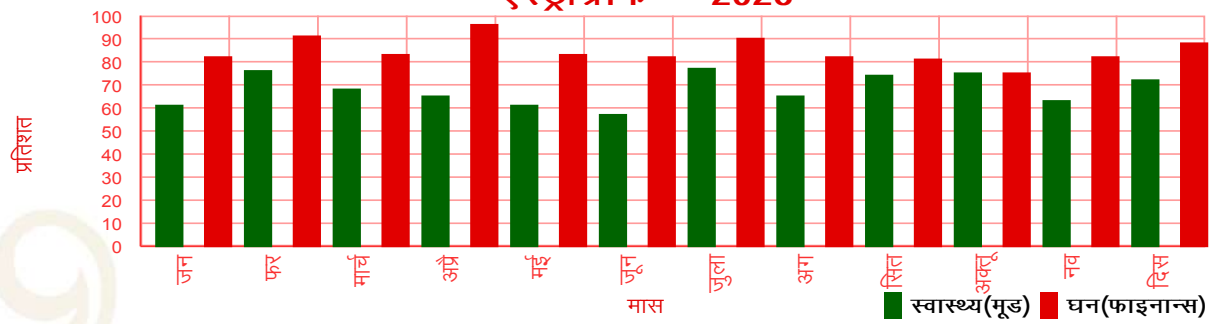

Boy
एस्ट्रोग्राफ — 2027

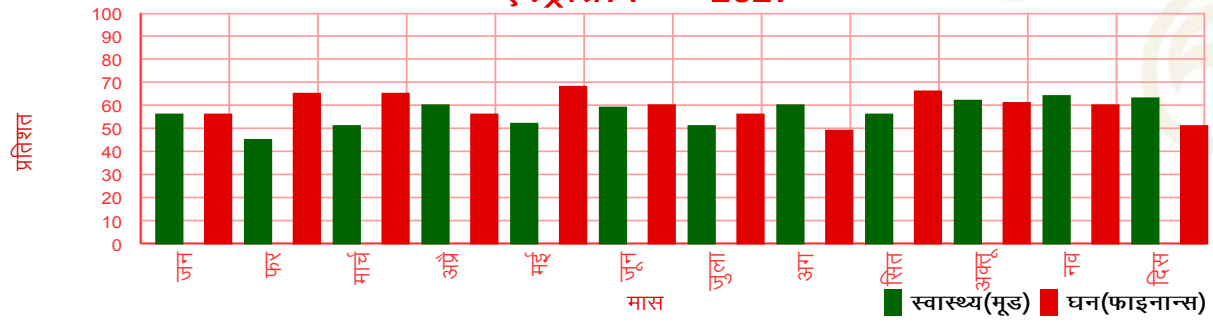

Girl
एस्ट्रोग्राफ — 2027

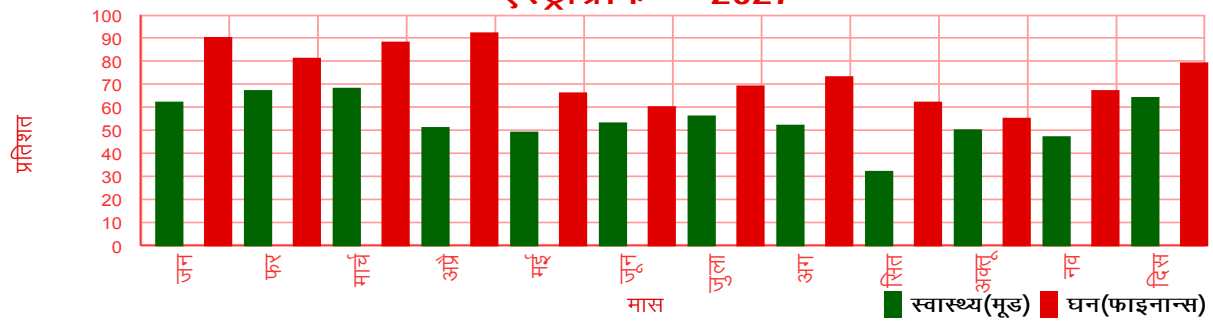

Boy
एस्ट्रोग्राफ — 2028

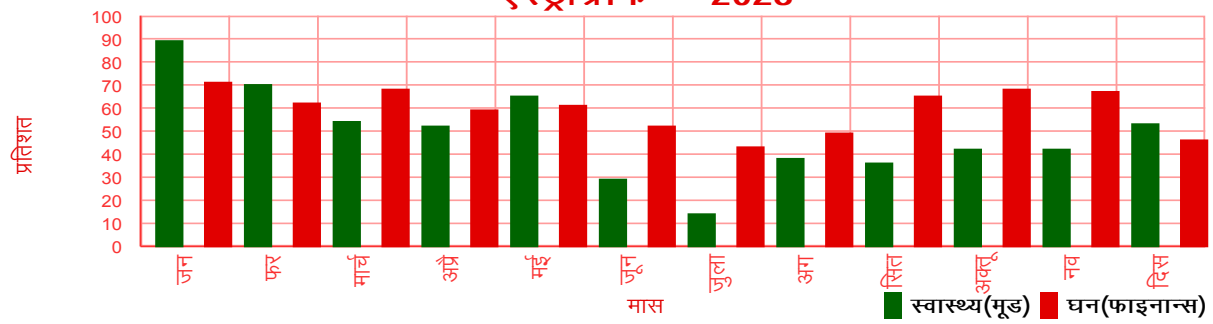

Girl
एस्ट्रोग्राफ — 2028

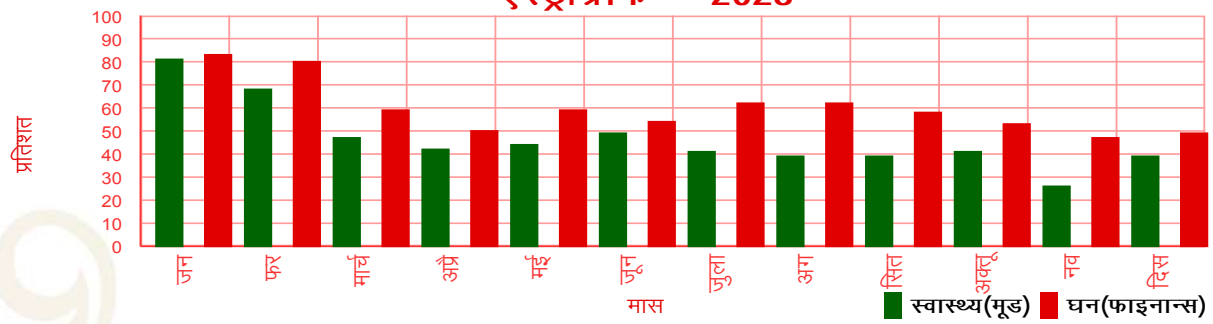

Boy Girl

Boy

एस्ट्रोग्राफ — 2029

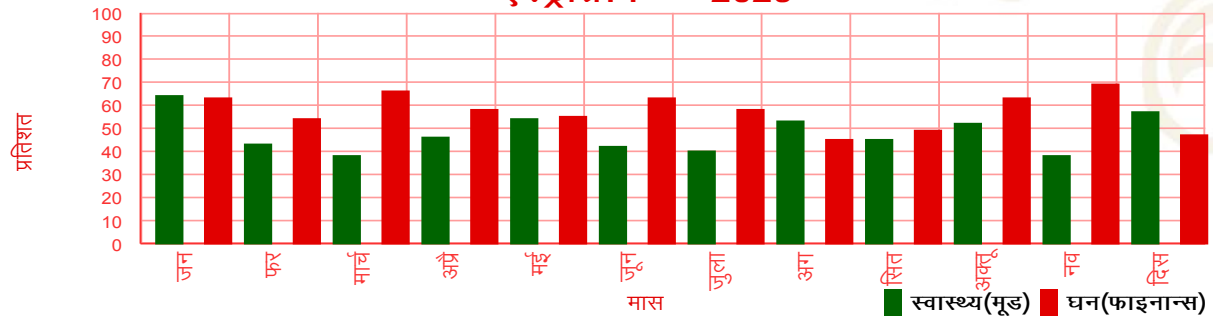

Girl

एस्ट्रोग्राफ — 2029

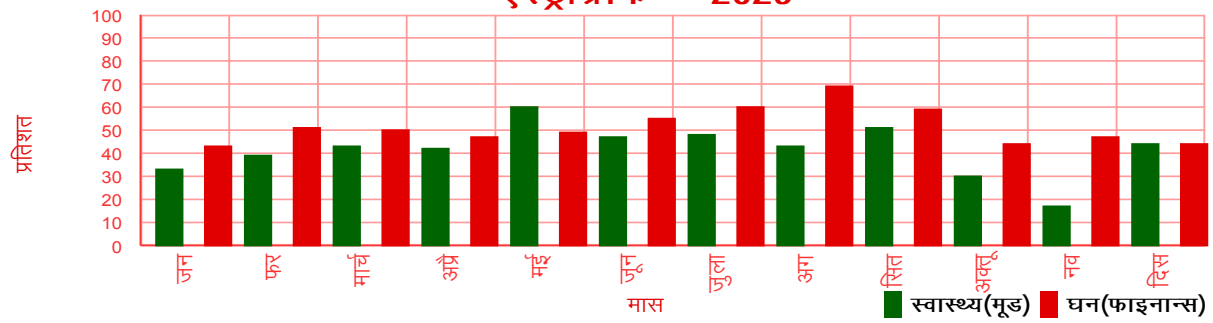

Boy

एस्ट्रोग्राफ — 2030

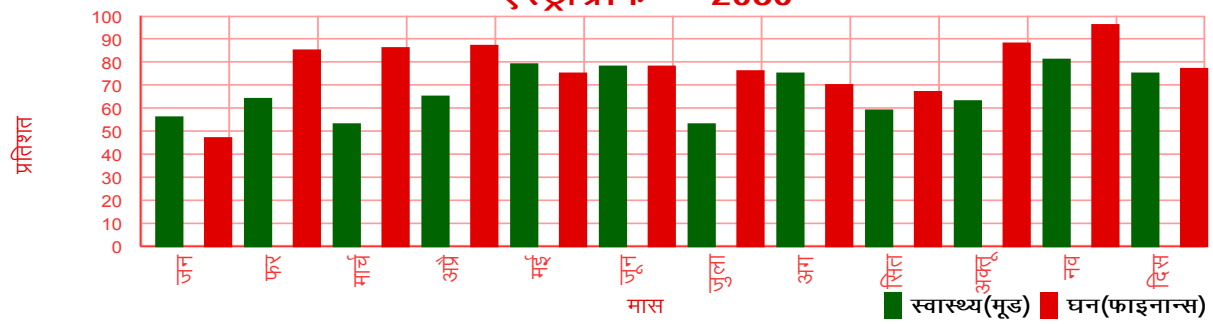

Girl

एस्ट्रोग्राफ — 2030

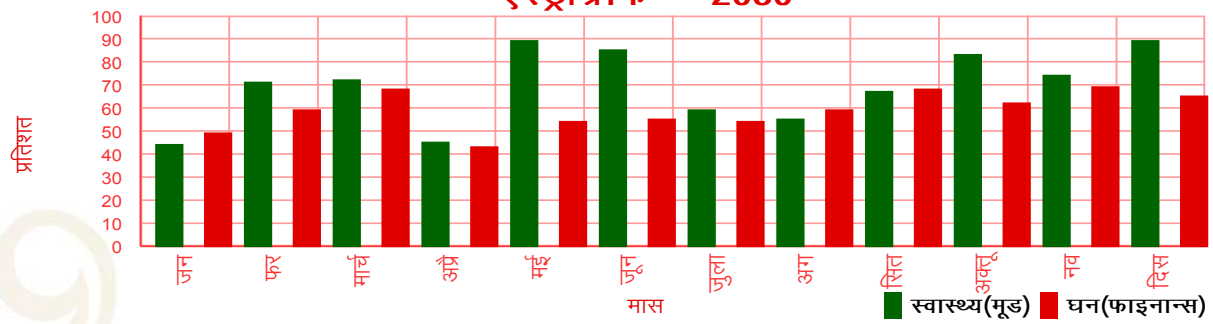

Boy Girl

Boy

एस्ट्रोग्राफ – 2031

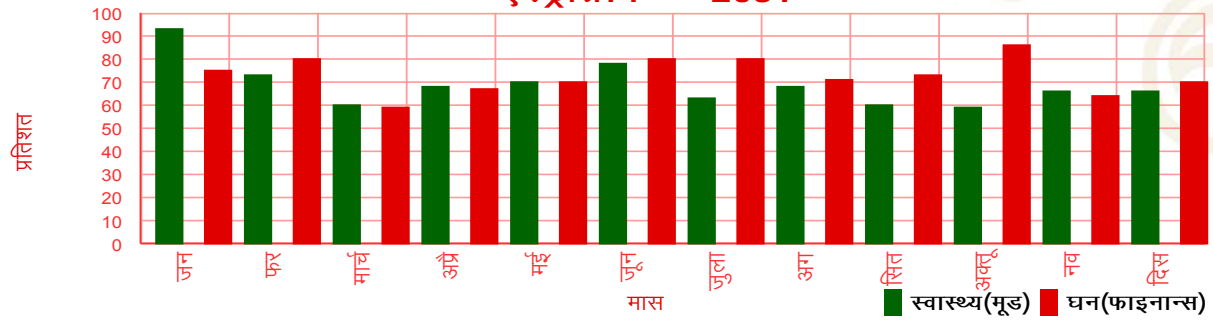

Girl

एस्ट्रोग्राफ – 2031

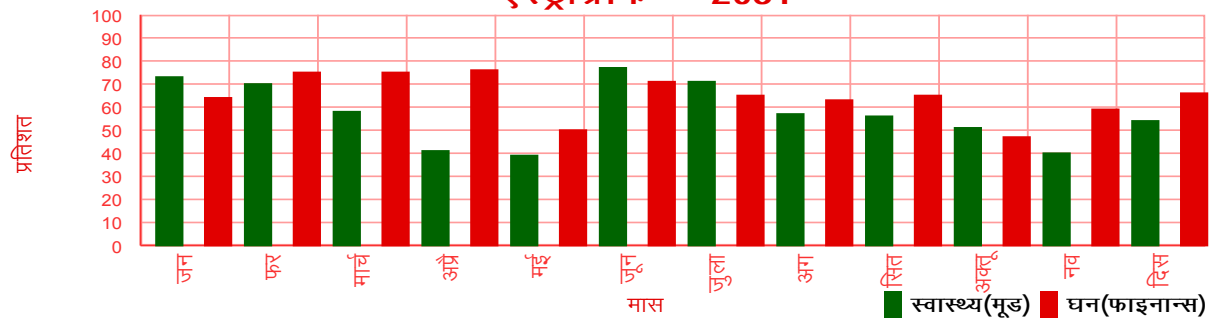

Boy

एस्ट्रोग्राफ – 2032

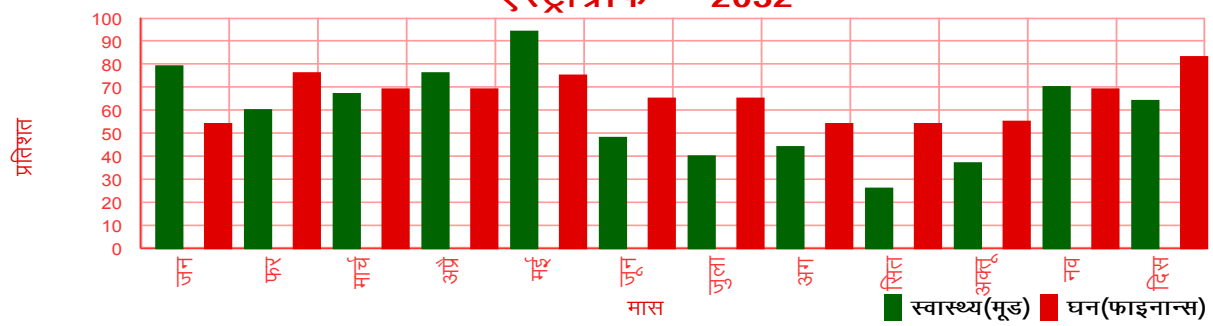

Girl

एस्ट्रोग्राफ – 2032

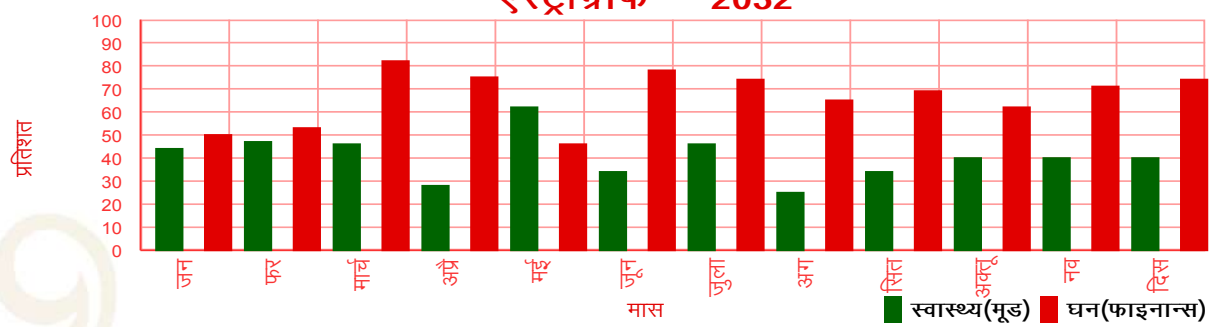

Boy Girl

Boy
एस्ट्रोग्राफ — 2033

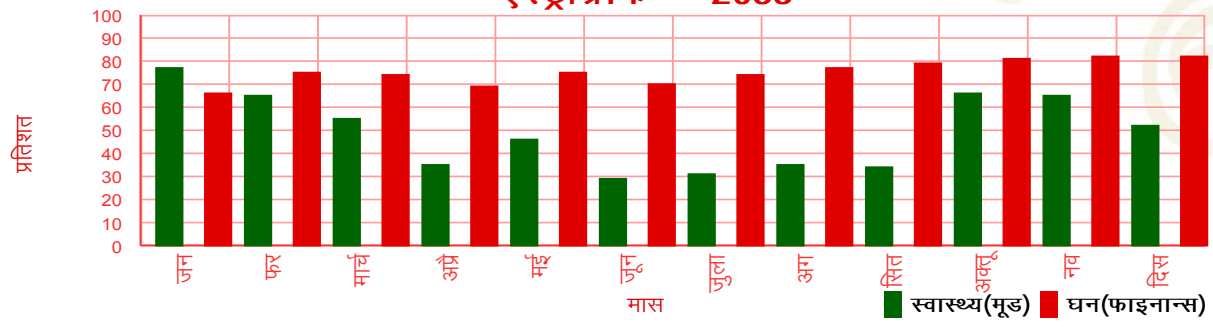

Girl
एस्ट्रोग्राफ — 2033

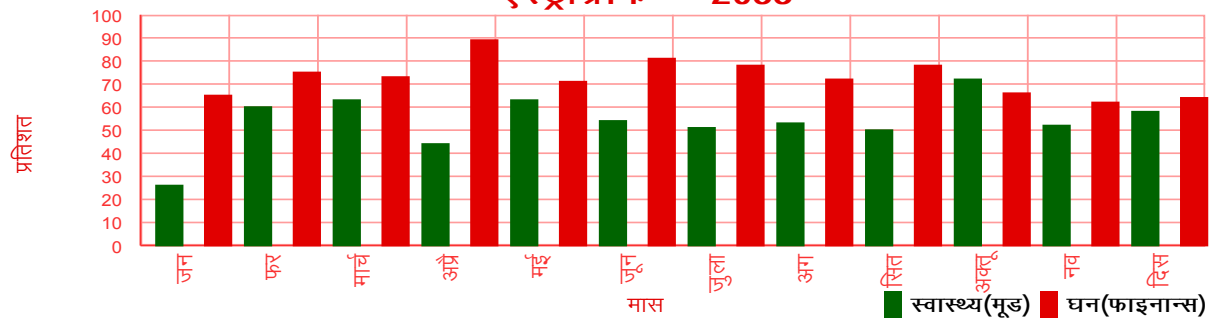

Boy
एस्ट्रोग्राफ — 2034

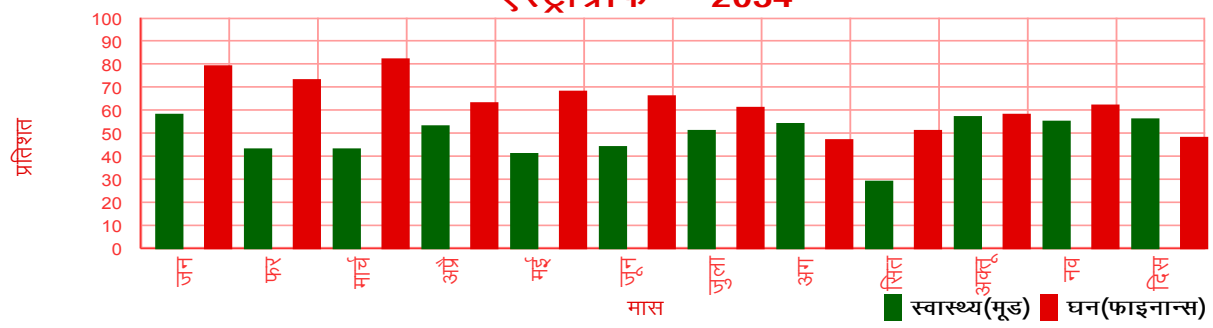

Girl
एस्ट्रोग्राफ — 2034

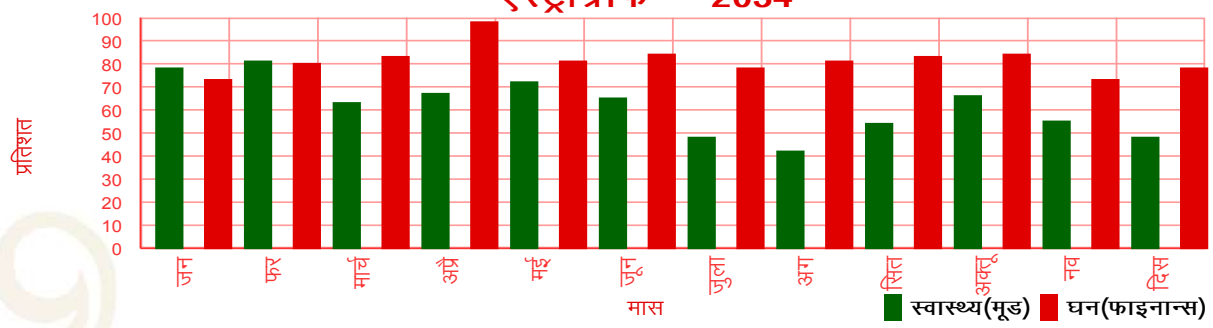

Boy
एस्ट्रोग्राफ – 2035

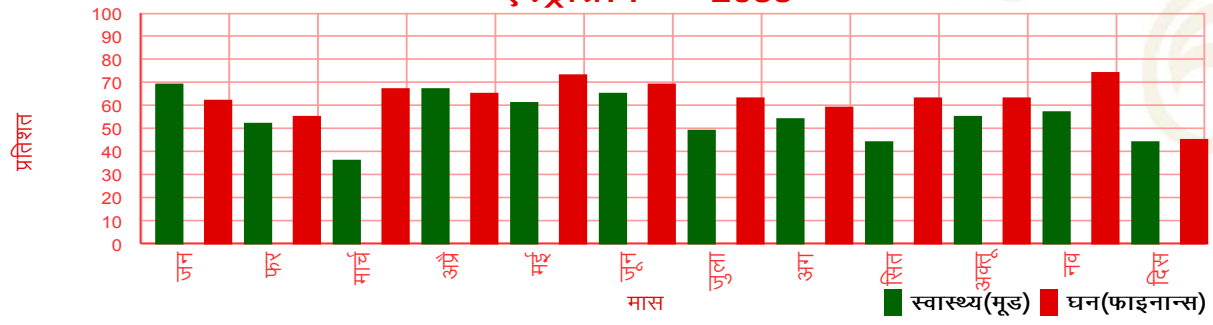

Girl
एस्ट्रोग्राफ – 2035

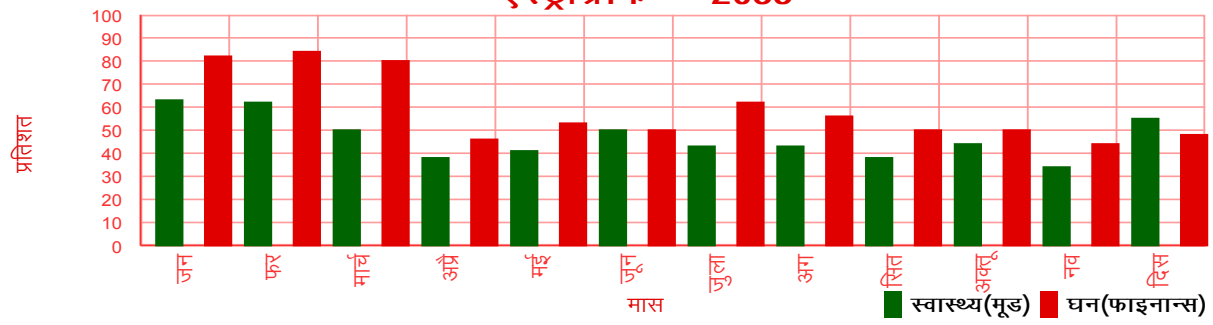

Boy
एस्ट्रोग्राफ – 2036

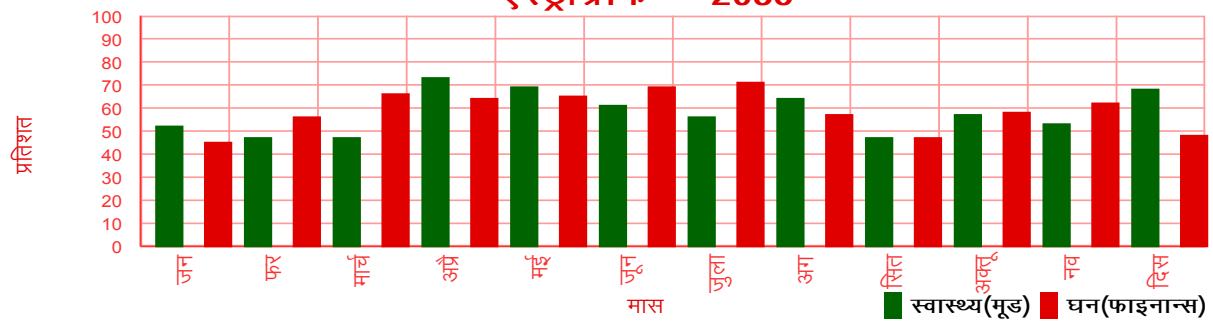

Girl
एस्ट्रोग्राफ – 2036